Annexure – 1

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, शंकरनगर, रायपुर (छ.ग.)
वार्षिक कलेण्डर सत्र् 2016-17

स. क्र.	माह	प्रस्तावित कार्य	प्रस्तावित तिथियां	प्रस्तावित अवधि	हितग्राही समूह	हितग्राही संख्या	प्रभारी
1	अप्रैल	बी.एड. और एम.एड. (द्वितीय सेमेस्टर) अध्यापन कार्य जारी	पूर्ण सेमेस्टर 15 जनवरी से 15 जून	6 माह	बी.एड. और एम.एड. प्रशिक्षार्थी	194	समस्त आचार्य
2	अप्रैल	School Internship Programme (B. Ed. IInd Sem.)	1–30 अप्रैल	1 माह	बी.एड. के प्रशिक्षार्थी	144	श्री के.के. शुक्ला
3	अप्रैल	School Internship Programme (M.Ed. IInd Sem.)	23–30 अप्रैल	7 दिन	एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	50	श्री के.के. शुक्ला
4	अप्रैल	जांच परीक्षा प्रारम्भ	प्रत्येक सोमवार एवं शुक्रवार	40 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	194	श्रीमती वाय. महाडिक
5	अप्रैल	Submission of Proposal of Dissertation	30 अप्रैल	–	एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	50	श्रीमती जे. एक्का
6	मई	सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि. पत्राचार पाठ्यक्रम बी.एड. प्रथम वर्ष सम्पर्क कार्यक्रम	01.05.2016 से 15.05.2016 (प्रथम वर्ष)	15 दिन	बी.एड. पत्राचार प्रशिक्षार्थी	95	श्री पी.सी. राव सावरकर
7	मई	सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि. पत्राचार पाठ्यक्रम बी.एड. द्वितीय वर्ष सम्पर्क कार्यक्रम	17.05.2016 से 31.05.2016 (द्वितीय वर्ष)	15 दिन	बी.एड. पत्राचार प्रशिक्षार्थी	95	श्री पी.सी. राव सावरकर
8	मई	मॉडल टेस्ट	2–7 मई	6 दिन	बी.एड. और एम.एड. प्रशिक्षार्थी	194	श्री शान्तानु बिश्वास
9	मई	साझा पहल	9 से 13 मई	5 दिन	उच्च माध्य विद्या. के प्राचार्य/शिक्षक	150	श्री सुनील मिश्रा

10	मई	Remedial Class For Slow Learners	9–13 मई	7 दिन	बी.एड. और एम.एड. प्रशिक्षार्थी	-	श्री के.के शुक्ला
11	मई	बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा	16 मई से 15 जून	1 माह	बी.एड. के प्रशिक्षार्थी	144	श्री शान्तानु बिश्वास
12	मई	एम.एड. द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा	16 मई से 15 जून	1 माह	एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	50	श्री शान्तानु बिश्वास
13	मई	Practical Exam B.Ed./M.Ed.	मई 2016	2 दिन	बी.एड./एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	144+50	श्रीमती जे. एक्का एवं श्री के.के. शुक्ला
14	जून	सत्र 2016–18 के बी. एड. के प्रथम सेमेस्टर के विभागीय प्रशिक्षार्थियों की प्रवेश प्रक्रिया	1 जून से 30 जून	1 माह	–	75	श्री आलोक शुक्ला
15	जून	सत्र 2016–18 के एम. एड. के प्रथम सेमेस्टर के विभागीय प्रशिक्षार्थियों एवं सीधी भर्ती की प्रवेश प्रक्रिया	1 जून से 30 जून	1 माह	–	46+4	श्रीमती जे. एक्का
16	जून	**समय सारणी निर्माण** बी.एड. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर एम.एड. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर	जून प्रथम सप्ताह	2 दिन	–	-	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
17	जून	ICT Workshop	13 से 18 जून	6 दिन	सी.टी.ई. फैकल्टी	20	श्री एस.के. तिवारी
18	जून	विश्व योग दिवस	21 जून	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
19	जून	पुरस्कार वितरण समारोह	23 जून	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
20	जून	Workshop on Gender Equity	25 से 27 जून	3 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	50	श्री सुनील मिश्रा
21	जून	Capacity Building Program for Teacher Educators on New Syllabus	28 से 29 जून	2 दिन	अकादमिक स्टाफ	20	श्री के.के. शुक्ला

22	जुलाई	बी.एड. तृतीय सेमेस्टर अध्यापन कार्य प्रारम्भ	जुलाई से दिसम्बर	6 माह	बी.एड. एवं एम.एड. तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	144+50	समस्त आचार्य
23	जुलाई	सत्र 2016–18 के प्रथम सेमेस्टर बी.एड. सीधी भर्ती की प्रवेश प्रक्रिया	1 जुलाई से प्रारम्भ	–	–	75	श्री आलोक शुक्ला
24	जुलाई	Content Based Workshop Need Analysis	1 से 2 जुलाई	2 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	80	श्री के.के. शुक्ला
25	जुलाई	बी.एड. एवं एम.एड. प्रथम सेमेस्टर का अध्यापन कार्य प्रारम्भ	जुलाई से दिसम्बर	6 माह	बी.एड. प्रथम सेमेस्टर एवं एम.एड. प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	150+50	समस्त आचार्य
26	जुलाई	बी.एड. एवं एम.एड. प्रथम सेमेस्टर का प्रार्थना अभ्यास	1 से 30 जुलाई	1 माह	बी.एड. प्रथम सेमेस्टर एवं एम.एड. प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	150+50	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
27	जुलाई	जांच परीक्षा प्रारम्भ	प्रत्येक सोमवार एवं शुक्रवार	40 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	394	श्रीमती वाय. महाडिक
28	जुलाई	Micro Teaching	1 से 8 जुलाई	8 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	144	श्री के.के. शुक्ला
29	जुलाई	Psychology Practical	प्रति सप्ताह (1 दिन)	24 दिन	बी.एड. तृतीय सेमेस्टर प्रशिक्षार्थी	144	डॉ. टी.पी. देवांगन
30	जुलाई	जोन स्तरीय विज्ञान सेमीनार	प्रथम सप्ताह	1 दिन	रायपुर जोन के शालेय विद्यार्थी	08	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
31	जुलाई	Content Based Workshop Module Development	11 से 15 जुलाई	5 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	80	श्री के.के. शुक्ला
32	जुलाई	Need Analysis of Library Maintenance & Usage	20 से 21 जुलाई	2 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	20	श्री एस. चन्द्रा
33	जुलाई	ICT Workshop	25 से 30 जुलाई	6 दिन	बी.एड एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	200	श्री एस.के. तिवारी
34	जुलाई	मुंशी प्रेमचंद जयंती का आयोजन	31 जुलाई	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल

35	अगस्त	School Internship Programme	1 अगस्त से 30 नवम्बर	4 माह	बी.एड. तृतीय सेमेस्टर प्रशिक्षार्थी	144	श्री के.के. शुक्ला
36	अगस्त	Workshop for Module Development of Library Maintenance & Usage	1 से 5 अगस्त	5 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	20	श्री एस. चन्द्रा
37	अगस्त	Action Research Workshop	2 से 4 अगस्त	3 दिन	बी.एड एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	50	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
38	अगस्त	स्वतंत्रता दिवस आयोजन	15 अगस्त	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
39	अगस्त	Content Based Workshop	22 से 27 अगस्त	5 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	200	श्री के.के. शुक्ला
40	अगस्त	Base Line Survey	23 अगस्त	1 दिन	बी.एड प्रथम सेमेस्टर एवं एम.एड. प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	200	श्री के.के. शुक्ला
41	सितम्बर	शिक्षक दिवस	5 सितम्बर	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
42	सितम्बर	जोन स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी	द्वितीय सप्ताह	1 दिन	रायपुर जोन के शालेय विद्यार्थी एवं बी.एड./एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	394	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
43	सितम्बर	M.Ed. Dissertation Data Collection	5 से 12 सितम्बर	8 दिन	एम.एड. तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	50	श्रीमती जे. एक्का
44	सितम्बर	Training on Library Maintenance & Usage	19 से 23 सितम्बर	5 दिन	उच्च माध्य विद्या. के शिक्षक	50	श्री एस. चन्द्रा
45	अक्टूबर	Need Analysis for establishing counseling center with trained counselors	3 से 5 अक्टूबर	3 दिन	उच्च माध्य विद्या. के शिक्षक	20	डॉ. टी.पी. देवांगन

46	अक्टूबर	Module Development for establishing counseling center with trained counselors	17 से 19 अक्टूबर	3 दिन	उच्च माध्य विद्या. के शिक्षक	20	डॉ. टी.पी. देवांगन
47	अक्टूबर	Workshop for establishing counseling center with trained counselors	18 से 22 अक्टूबर	5 दिन	उच्च माध्य विद्या. के शिक्षक	40	डॉ. टी.पी. देवांगन
48	अक्टूबर	Workshop on Micro Planning	22 से 27 अक्टूबर	7 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	200	श्रीमती सविता राजपूत
49	अक्टूबर	सांस्कृतिक कार्यक्रम	24 से 29 अक्टूबर	6 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	394	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
50	अक्टूबर	पं. सुन्दरलाल शर्मा प्रायोगिक परीक्षा अभ्यास शिक्षण	प्रथम सप्ताह	7 दिन	बी.एड. पत्राचार प्रशिक्षार्थी	97	श्री पी.सी. राव सावरकर
51	नवम्बर	Need Analysis of Develoment of Scientific Attitude & Temper	1 से 2 नवम्बर	2 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	20	श्रीमती सुनीता साव
52	नवम्बर	Workshop on Life Skill	2 से 4 नवम्बर	3 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. प्रशिक्षार्थी	200	श्री पी.सी. राव सावरकर
53	नवम्बर	Workshop for Module Formation of Development of Scientific Attitude & Temper	7 से 11 नवम्बर	5 दिन	उच्च. माध्य. विद्या. के शिक्षक	20	श्रीमती सुनीता साव
54	नवम्बर	खेलकूद कार्यक्रम	9 से 11 नवम्बर	3 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	394	श्री आलोक शुक्ला
55	नवम्बर	Research Seminar (National Level)	24 से 25 नवम्बर	2 दिन	Teacher Educators	100	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
56	नवम्बर	Practical Exam B.Ed./M.Ed.	अंतिम सप्ताह	7 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. प्रशिक्षार्थी	394	श्रीमती जे. एक्का श्री. के.के. शुक्ला
57	दिसम्बर	Model Test	1 से 7 दिसम्बर	7 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. प्रशिक्षार्थी	394	श्री शान्तानु बिश्वास

58	दिसम्बर	मानव अधिकार दिवस	10 दिसम्बर	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
59	दिसम्बर	Remedial Class For Slow Learners	8 से 15 दिसम्बर	8 दिन	बी.एड. एवं एम.एड. प्रशिक्षार्थी	394	श्री के.के. शुक्ला
60	दिसम्बर	पं. सुन्दरलाल शर्मा बी. एड. सत्रांत	1 से 15 दिसम्बर	15 दिन	बी.एड. पत्राचार प्रशिक्षार्थी	97	श्री पी.सी. राव सावरकर
61	दिसम्बर	बी.एड. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर परीक्षा एम.एड. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर परीक्षा	15 दिसम्बर, 2016 से 15 जनवरी, 2017	1 माह	बी.एड. प्रथम व तृतीय सेमेस्टर तथा एम.एड. प्रथम व तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	394	श्री शान्तानु बिश्वास
62	दिसम्बर	Workshop on Development of Scientific Attitude & Temper	5 दिसम्बर से 9 दिसम्बर	5 दिन	उच्च माध्य विद्या. के शिक्षक	50	श्रीमती सुनीता साव
63	जनवरी	समय सारणी निर्माण बी.एड. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर एम.एड. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर	2 से 3 जनवरी	2 दिन	बी.एड एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	394	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
64	जनवरी	Annual Work Plan 2017-18 (C.S.S.) का निर्माण	9 से 14 जनवरी	6 दिन	–	-	श्रीमती शेफाली मिश्रा
65	जनवरी	Research Methodology Workshop	16 से 21 जनवरी	6 दिन	सी.टी.ई. फैकल्टी एवं एम.एड. प्रशिक्षार्थी	75	डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन
66	जनवरी	बी.एड. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर तथा एम.एड. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर का अध्यापन कार्य प्रारम्भ	16 जनवरी से 15 जून	6 माह	बी.एड एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थी	394	समस्त आचार्य
67	जनवरी	बी.एड. एवं एम.एड. प्रशिक्षार्थियों का School Internship पर Orientation Program	16 जनवरी से 25 जनवरी	10 दिन	बी.एड द्वितीय सेमेस्टर एवं एम.एड. द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	200	श्री के.के शुक्ला
68	जनवरी	गणतंत्र दिवस का आयोजन	26 जनवरी	1 दिन	अकादमिक स्टाफ बी. एड एवं एम.एड के प्रशिक्षार्थी	414	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल

69	जनवरी	शासकीय विद्यालय के प्राचार्य / प्रधानपाठक का Orientation Program (B.Ed. School Internship)	28 जनवरी	1 दिन	उच्च. माध्य. विद्यालय के प्राचार्य	40	श्री के.के शुक्ला
70	फरवरी	Inter DIET Competition	1 से 4 फरवरी	4 दिन	डाईट के प्रशिक्षार्थी	100	प्राचार्य, डाईट रायपुर
71	फरवरी	School Internship Program	1 फरवरी से 2 मार्च	1 माह	बी.एड द्वितीय सेमेस्टर एवं एम.एड. द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	150+50	श्री के.के शुक्ला
72	फरवरी	मातृ–पितृ दिवस	14 फरवरी	1 दिन	बी.एड, एम.एड. के प्रशिक्षार्थी एवं समस्त आचार्य	394+20	डॉ. श्रीमती सीमा अग्रवाल
73	फरवरी	रिसर्च सेमीनार	7 से 11 फरवरी	5 दिन	एम.एड. द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	50	श्रीमती जे. एक्का
74	मार्च	नये सत्र की गतिविधियों की कार्ययोजना तैयार करना (Annual Calender)	1 से 7 मार्च	7 दिन	–	-	श्रीमती शेफाली मिश्रा
75	मार्च	Submission of Proposal of Dissertation	31 मार्च	–	एम.एड. द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी	50	श्रीमती जे. एक्का

Annexure – 2 (i)

Student's Feedback about College

2016-17

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

S S

Coordinator

Mrs. Shephali Mishra

Govt. College of Teacher Education (CTE)

फीडबैक महाविद्यालय के लिए प्रशिक्षार्थियों द्वारा & 2016-17

FEEDBACK ANALYSIS (STUDENT'S) 2016-17

(B.Ed and M.Ed)

क्र.	प्रश्न	अंको में				प्रतिशत में			
		बहुत अच्छा	अच्छा	संतोष प्रद	असंतोष प्रद	बहुत अच्छा	अच्छा	संतोष प्रद	असंतोष प्रद
1	महाविद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया पर आप अपना मत दें?	74	76	33	2	41.89	41.37	16.00	0.74
2	महाविद्यालय में सीधी भर्ती से प्रवेश के लिए प्रशिक्षार्थियों के लिए ऑनलाईन काउंसिलिंग की प्रक्रिया पर आप अपना मद दें?	77	80	26	1	41.11	44.11	13.40	0.37
3	महाविद्यालय द्वारा निर्धारित की गई उपस्थिति (Attendance) प्रक्रिया स्वअनुशासन बनाने में कितनी कारगर हैं?	105	49	24	8	62.18	23.81	12.03	2.96
4	महाविद्यालय द्वारा प्रतिदिन की जाने वाली प्रार्थना सभा आपके स्वस्थ मानसिक विकास में कितनी सहायक है, आप अपना मत दें?	142	35	8	0	79.03	17.37	3.59	0.00
5	प्रतिदिन की प्रार्थना सभा में शिक्षक प्रशिक्षार्थियों द्वारा उनके शिक्षा से जुड़े संस्मरण तथा गैर विभागीय प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रेरक प्रसंग की श्रृंखला आयोजित की जाती है। इस अभिव्यक्ति से आपके अभिव्यक्ति	134	44	6	0	71.66	25.11	2.85	0.00

	कौशल की प्रभाविता पर आप अपना मत दें?								
6	संस्मरण एवं प्रेरक प्रसंग की श्रृंखला से आपके जीवन/सोच में कितना सकारात्मक पड़ा पर आप अपना मत दें।	99	72	13	0	57.44	36.11	6.07	0.00
7	छात्र संघ चुनाव प्रक्रिया पर आप अपना मत दें?	13	56	45	41	7.96	32.70	31.15	16.44
8	महाविद्यालय में छात्र संघ की सक्रिय भागीदार के संबंध में आप अपना मत दें?	28	55	132	25	17.92	32.96	39.96	10.52
9	महाविद्यालय की स्वच्छता व्यवस्था के बारे में आप अपना मत दें?	74	133	26	0	40.63	43.96	14.03	0.00
10	महाविद्यालय की पेयजल व्यवस्था के बारे में आप अपना मत दें?	57	81	42	6	31.18	45.11	21.22	2.85
11	महाविद्यालय के बाग–बगीचों के समुचित रख–रखाव के संबंध में आप अपना मत दें?	80	74	27	4	42.85	41.26	14.40	1.48
12	महाविद्यालय के प्रसाधन कक्षों की स्वच्छता के संबंध में आप अपना मत दें?	43	83	51	7	21.59	47.74	27.07	3.22
13	महाविद्यालय के भवन व्यवस्था के संबंध में आप अपना मत दें?	23	80	65	11	11.66	44.11	36.03	5.33

14	महाविद्यालय के अनुशासन के संबंध में आप अपना मत दें?	69	81	32	2	38.15	43.23	16.89	0.74
15	महाविद्यालय की बी.एड. /एम.एड. की बैठक व्यवस्था के बारे में अपना मत दें?	12	69	73	29	6.96	39.40	40.89	12.00
16	बी.एड./एम.एड. के पाठ्यक्रम का आपके शिक्षण कौशल के उन्नयन में कैसा योगदान होगा अपना मत दें?	68	95	21	1	35.26	54.07	10.92	0.37
17	विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम जिन उद्देश्यों को लेकर रखा गया है महाविद्यालय द्वारा उन उद्देश्यों की पूर्ति के संबंध में आप अपना मत दें?	50	84	45	5	27.33	48.11	22.96	1.85
18	महाविद्यालय द्वारा पूरक पाठ्यक्रम तैयार कर शून्य कालखण्ड में सम–सामयिक विषयों जैसे– आरटीई, सीसीई, स्पोकन इंग्लिश, तनाव प्रबंधन आदि का प्रशिक्षण दिया गया था। इसकी उपयोगिता पर आप अपना मत दें?	70	53	41	19	49.89	21.11	21.96	7.29
19	वर्तमान पाठ्यक्रम बाल/किशोर के मनोविज्ञान को समझने में सहायक है पर आप अपना मत दें?	62	78	39	3	39.00	43.74	13.40	2.37
20	महाविद्यालय में अध्यापन की जाने वाली कक्षाओं की औसत नियमितता पर आप अपना मत दें?	35	90	51	8	18.37	46.07	31.96	4.22

21	कक्षा शिक्षण में सामान्यतः विभिन्न विषयों के विषय–वस्तु की अवधारणा की स्पष्टता पर आप अपना मत दें।	36	93	50	3	14.03	48.33	32.66	3.11
22	महाविद्यालय में अभ्यास शिक्षण के पूर्व की तैयारी (सेमीनार,पाठ प्रदर्शन) पर आप अपना मत दें?	55	87	37	5	31.44	53.33	15.00	1.85
23	महाविद्यालय में अभ्यास शिक्षण के दौरान जो मार्गदर्शन मिला उसकी प्रभाविता पर आप अपना मत दें?	56	82	43	2	30.81	45.48	22.22	0.74
24	प्रशिक्षण के दौरान निर्धारित पाठ योजना का आपके शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव पर आप अपना मत दें?	58	91	29	1	29.03	55.07	14.52	0.36
25	कक्षा अध्यापन के पूर्व पाठ योजना बनाकर अध्यापन किये जाने से कक्षा में बच्चों की सीखने की प्रक्रिया की आपके मतानुसार कैसा प्रभाव संभावित है? आप अपना मत दें?	85	72	23	3	44.07	39.89	12.92	1.11
26	विभिन्न कौशलों (सूक्ष्म शिक्षण) के प्रयोग से अधिगम एवं शिक्षण के प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें?	69	90	22	2	35.63	51.59	10.03	1.37
27	शिक्षण विधि कक्षा शिक्षण में कितनी उपयोगी है? आप अपना मत दें?	69	91	24	0	35.00	52.59	11.40	0.00

28	महाविद्यालय द्वारा प्रशिक्षार्थियों को विद्यालय की समस्त गतिविधियों एवं विद्यालय में संधारित किए जाने वाले अभिलेखों से परिचित कराने के लिए एक सप्ताह हेतु इंटर्नशिप का नवाचार किया गया। इसकी प्रभाविता पर आप अपना मत दें?	68	83	30	3	35.89	45.85	16.78	1.11
29	महाविद्यालय में आयोजित चेतना विकास मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें?	55	94	35	1	30.44	51.18	18.00	0.37
30	महाविद्यालय में आयोजित वाइटल समूह द्वारा आयोजित मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें?	40	77	52	4	23.63	44.89	24.29	1.48
31	महाविद्यालय में शून्य कालखण्ड में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें?	62	56	48	17	34.29	32.70	24.70	7.55
32	महाविद्यालय में शून्य कालखण्ड में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की एक विद्यालय के लिए उपयोगिता पर आप अपना मत दें?	81	71	25	4	46.37	36.37	13.02	0.98
33	प्रशिक्षण के दौरान महाविद्यालय में आपको दिया गया कम्प्यूटर प्रशिक्षण (आईसीटी) की उपयोगिता की प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें?	37	78	53	16	19.37	42.74	30.96	6.55

34	महाविद्यालय में कराए गए मनोवैज्ञानिक प्रयोग की एक शिक्षक के लिए कितनी उपयोगिता है? आप अपना मत दें?	76	88	22	0	40.70	48.96	10.66	0.00
35	अंतिम अभ्यास पाठ के दौरान प्राध्यापकों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन/सहायता के स्तर पर आप अपना मत दें?	47	88	39	7	26.22	48.33	20.11	3.22
36	महाविद्यालय के 'पुस्तकालय' में पुस्तक प्राप्ति की खुली अलमारी' व्यवस्था की परीक्षा तैयारी में सार्थकता पर आप अपना मत दें?	112	50	21	1	59.11	29.22	10.92	0.37
37	महाविद्यालय के पुस्तकालय में आपकी आवश्यकता अनुरूप पुस्तकों की उपलब्धता के स्तर पर आप अपना मत दें।	34	70	63	16	18.89	41.66	29.63	8.44
38	महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठक व्यवस्था के संबंध में आप आपना दें?	86	63	29	8	44.44	38.44	15.15	2.96
39	महाविद्यालय में होने वाले क्रीड़ा प्रतियोगिता/सांस्कृतिक प्रतियोगिता के संबंध में आप अपना मत दें?	107	47	20	6	55.37	27.48	10.55	2.85
40	महाविद्यालय में आयोजित ग्रामीण शिविर के बारे में आप अपना मत दें।	34	63	62	24	20.15	36.55	33.03	9.52
41	ग्रामीण जीवन को समझने और शालेय कार्य में ग्रामीण शिविर की उपयोगिता पर आप अपना मत दें?	39	75	50	18	22.63	43.52	24.81	6.66

42	महाविद्यालय में वर्ष के दौरान तीन बार आयोजित प्लेसमेंट कार्यक्रम (सीधी भर्ती प्रशिक्षार्थियों के लिए) नवाचार की प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें?	43	80	41	15	26.00	46.00	19.59	5.55
43	महाविद्यालय में उपलब्ध समग्र सुविधाओं पर आप अपना मत दें?	44	96	38	2	23.22	53.18	20.73	0.74
44	महाविद्यालयीन प्रबंध व्यवस्था, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, प्रशासन आदि समग्र व्यवस्थाओं पर प्रशिक्षार्थियों से सीधे एवं त्वरित फीडबैक/सुझाव प्राप्त करने हेतु महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा स्थापित नवाचारी Feedback & Sugestion Box की उपयोगिता पर आप अपना मत दें।	96	64	19	2	50.66	36.92	8.92	0.74
45	Feedback & Sugestion Box के द्वारा प्रशिक्षार्थियों ने महाविद्यालय प्रबंधन को जो फीडबैक एवं सुझाव प्रदान किए थे उन पर की गई त्वरित कार्यवाही पर आप अपना मत दें।	83	73	27	2	47.11	40.26	11.89	0.74
46	महाविद्यालय में साप्ताहिक निबंध, सात्रिक कार्य एवं जॉच परीक्षा के क्रियाकलाप की उपयोगिता पर आप अपना मत दें।	72	82	24	4	38.63	46.11	11.40	1.48

47	महाविद्यालय के पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप की प्रभावशीलता पर आप अपना मत दें।	51	87	31	3	28.33	49.85	14.63	1.11
48	महाविद्यालय में शोध कार्य करने हेतु जो मार्गदर्शन दिया गया उसकी प्रभावशीलता के संबंध में आप अपना मत दें।	32	83	55	7	20.03	45.85	27.92	2.59
49	क्रियात्मक अनुसंधान/लघुशोध कार्य करने की क्षमता का उपयोग आपकी विद्यालयीन/शैक्षिक समस्याओं को हल करने में किस स्तर तक प्रभावी रहेगा? अपना मत दें?	53	90	29	6	34.74	46.55	13.26	2.22

महाविद्यालय की गुणवत्ता के उन्नयन के लिए निम्नलिखित चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता पाई गई –

क.	प्रश्न	अंको में				प्रतिशत में			
		बहुत अच्छा	अच्छा	संतोष प्रद	असंतोष प्रद	बहुत अच्छा	अच्छा	संतोष प्रद	असंतोष प्रद
7	छात्र संघ चुनाव प्रक्रिया पर आप अपना मत दें?	13	56	45	41	7.96	32.70	31.15	16.44
8	महाविद्यालय में छात्र संघ की सक्रिय भागीदार के संबंध में आप अपना मत दें?	28	55	132	25	17.92	32.96	39.96	10.52
15	महाविद्यालय की बी. एड./एम.एड. की बैठक व्यवस्था के बारे में अपना मत दें?	12	69	73	29	6.96	39.40	40.89	12.00

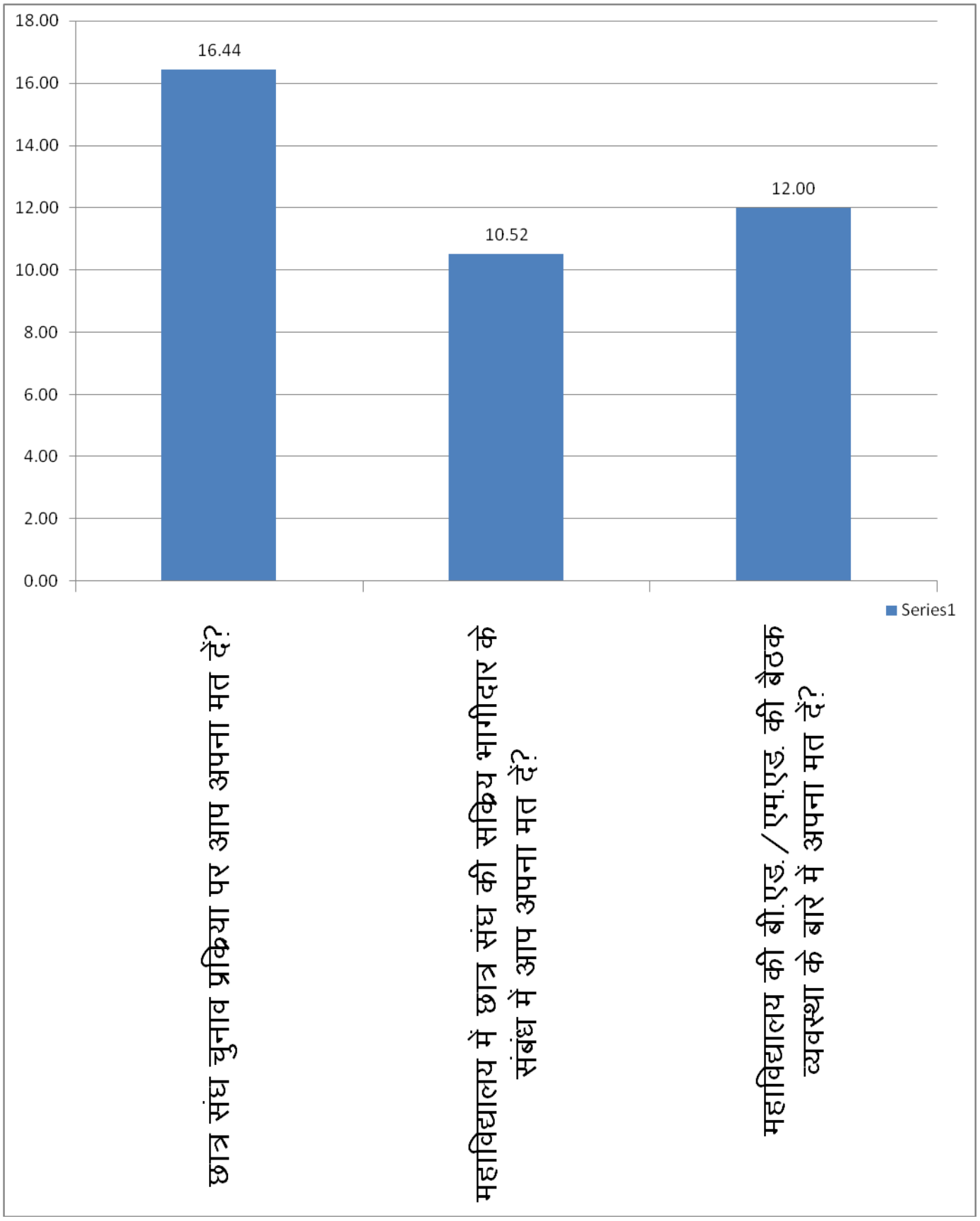
18.00
16.00
14.00
12.00
10.00
8.00
6.00
4.00
2.00
0.00
16.44
10.52
12.00
Series1
छात्र संघ चुनाव प्रक्रिया पर आप अपना मत दें?
महाविद्यालय में छात्र संघ की सक्रिय भागीदार के संबंध में आप अपना मत दें?
महाविद्यालय की बी.एड. / एम.एड. की बैठक व्यवस्था के बारे में अपना मत दें?

Student Feedback Analysis Report – 2016-17

महाविद्यालय की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने हेतु निम्नानुसार दिशा निर्देश दिए गए –

(1) छात्र संघ चुनाव प्रकिया पर आप अपना मत दें – चयन प्रकिया का निर्धारण विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है एवं महाविद्यालय को कड़ाई से इन निर्देशों का पालन करने हेतु कहा जाता है। चयन समिति को छात्रसंघ चयन प्रकिया का कड़ाई से पालन करने हेतु निर्देशित किया गया। चयन प्रकिया आधारित है, इस का ध्यान रखने हेतु चयन समिति को निर्देशित किया गया।

(2) महाविद्यालय में छात्र संघ की सकिय भागीदार के संबंध में आप अपना मत दें – मुख्यतः यह छात्रसंघ के अधिकारियों पर निर्भर किया गया। करता है कि पे समस्त गतिविधियों से किस प्रकार से जुड़ते है। महाविद्यालय में छात्रसंघ की भागीदारी बढ़ाने हेतु संबंधित प्रभारी को निर्देशित किया गया। महाविद्यालय की विभिन्ना गतिविधियों में छात्रसंघ के पदाधिकारियों की सहभागिता बढ़ाने हेतु योजना बनाने एवं उसके कियान्वयन हेतु निर्देशित किया गया।

(3) महाविद्यालय की बी.एड./एम.एड. की बैठक व्यवस्था के बारे में अपना मत दें – महाविद्यालय की नई बिल्डिंग का निर्माण जुलाई 2017 से प्रारंभ हो रहा है। संभावना है कि यह आगामी सत्र तक पूर्ण हो जाएगा इसके पश्चात बैठक व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्थाएं अच्छी हो जाएगी।

Annexure – 2 (ii)

Student's Feedback about Teachers

2016-17

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

Coordinator

Mrs. Shephali Mishra

Govt. College of Teacher Education (CTE)

Student's Feedback about Teachers 2016-17

स. क.	आकादमिक सदस्यों का नाम	समय के पाबंद (%)	प्रशिक्षार्थियों के प्रति संवेदनशीलता (%)	अध्यापन कौशल (%)	प्रशिक्षार्थियों /सहकर्मी के साथ व्यवहार (%)	महाविद्यालय में सक्रिय सहभागिता (%)	नवाचारी (%)	प्रेरक (%)	सकारात्मक दृष्टिकोण (%)	मददगार (%)	लोक तांत्रिक प्रशासक (%)	समग्र व्यक्तित्व (%)	कुल प्रतिशत
1	डॉ. योगेश शिवहरे (प्राचार्य)	94.60	92.64	82.84	92.40	95.34	91.99	90.44	93.62	89.46	90.93	87.99	**92.96**
2	श्रीमती जे. एक्का	76.19	82.14	76.19	80.95	79.76	71.43	80.95	76.19	76.19	75.00	76.76	**76.51**
3	डॉ. टी. पी. देवांगन	90.47	92.85	84.52	89.28	85.71	80.95	83.33	92.85	88.09	83.33	64.28	**88.79**
4	श्री पी. सी.राव सावरकर	81.81	81.81	84.09	75.00	75.00	77.29	79.54	75.00	72.72	77.27	77.27	**73.35**
5	श्री के.के. शुक्ला	89.00	80.66	82.66	78.33	81.34	79.67	75.00	78.67	77.34	76.00	73.67	**79.26**
6	श्री यू.के. चक्रवर्ती	89.29	83.33	79.76	86.90	82.14	79.76	79.76	85.71	84.52	78.57	64.29	**81.27**
7	श्रीमती शेफाली मिश्रा	91.12	89.51	91.92	90.32	90.32	87.90	89.51	89.51	87.09	84.67	81.45	**89.67**
8	श्रीमती कल्पना देशमुख	95.94	92.56	93.24	91.89	82.43	83.78	87.83	87.16	89.86	88.51	92.56	**89.61**
9	श्रीमती सुनीता साव	81.25	76.56	63.28	78.90	71.09	60.94	65.63	71.88	74.22	64.84	71.87	**70.95**
10	श्रीमती एम. विजयलक्ष्मी	91.98	71.79	86.53	82.05	79.48	75.00	77.88	83.65	81.41	73.39	77.56	**76.84**
11	डॉ. (श्रीमती) सीमा अग्रवाल	58.99	55.92	50.21	57.23	62.28	51.53	51.35	57.45	51.31	51.31	54.82	**57.27**
12	श्री शान्तनु विश्वास	84.62	82.69	88.46	80.77	82.69	80.77	75.00	78.85	71.15	73.07	82.69	**80.07**
13	श्री सतीश	80.88	84.55	78.67	84.55	81.61	77.94	77.94	86.76	85.29	72.79	86.02	**81.55**

	तिवारी												
14	डॉ. (श्रीमती) प्रतिभा देवांगन	82.03	74.21	77.34	73.43	74.60	74.60	73.82	76.56	76.56	67.96	69.14	**75.73**
15	श्री एस. एस. चन्द्रा	86.36	90.90	81.81	90.90	88.63	88.81	79.55	86.36	90.90	81.81	52.27	**83.06**
16	श्री एस. आर. महाड़िक	75.78	74.22	56.25	76.55	73.44	57.81	65.63	71.09	71.88	67.97	66.41	**68.82**
17	श्रीमती वाय. महाड़िक	85.00	83.46	66.54	81.15	86.15	64.61	71.92	76.92	83.84	73.46	70.00	**76.61**
18	श्री सुनील मिश्रा	76.27	89.22	75.43	89.22	88.36	82.75	82.75	83.62	82.32	79.74	79.74	**87.56**
19	श्रीमती मधु दानी	91.44	90.06	77.74	83.90	81.16	76.03	76.03	83.56	81.64	75.00	71.58	**80.70**
20	श्री एस. के. राठौर	87.89	84.74	85.52	83.68	74.21	74.74	77.10	81.58	82.11	75.00	77.63	**80.38**
21	श्री संजय चतुर्वेदी	64.77	63.06	50.85	63.35	63.92	52.56	55.96	63.07	59.66	59.94	61.08	**59.89**
महायोग		**1755.68**	**1716.88**	**1613.85**	**1710.75**	**1679.66**	**1570.86**	**1596.92**	**1680.06**	**1657.56**	**1570.56**	**1539.08**	**1650.85**
औसत प्रतिशत		**83.60**	**81.76**	**76.85**	**81.46**	**79.98**	**74.80**	**76.04**	**80.00**	**78.93**	**74.79**	**73.29**	**78.61**

Student's Feedback about Teachers 2016-17

महाविद्यालय की गुणवत्ता के उन्नयन के लिए निम्नलिखित चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता पाई गई –

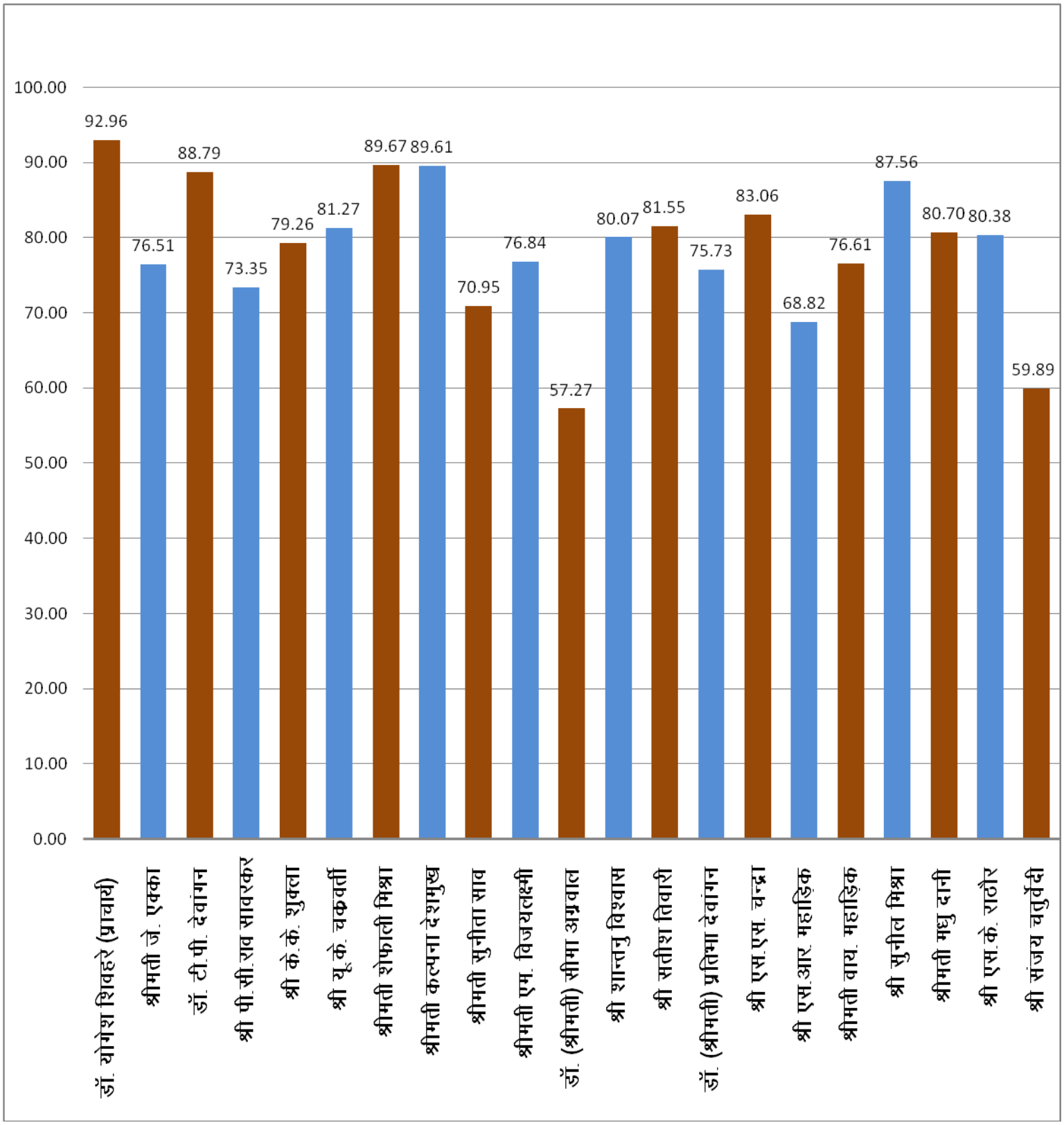

Student's Feedback about Teachers 2016-17

महाविद्यालय की गुणवत्ता के उन्नयन के लिए निम्नलिखित चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता पाई गई –

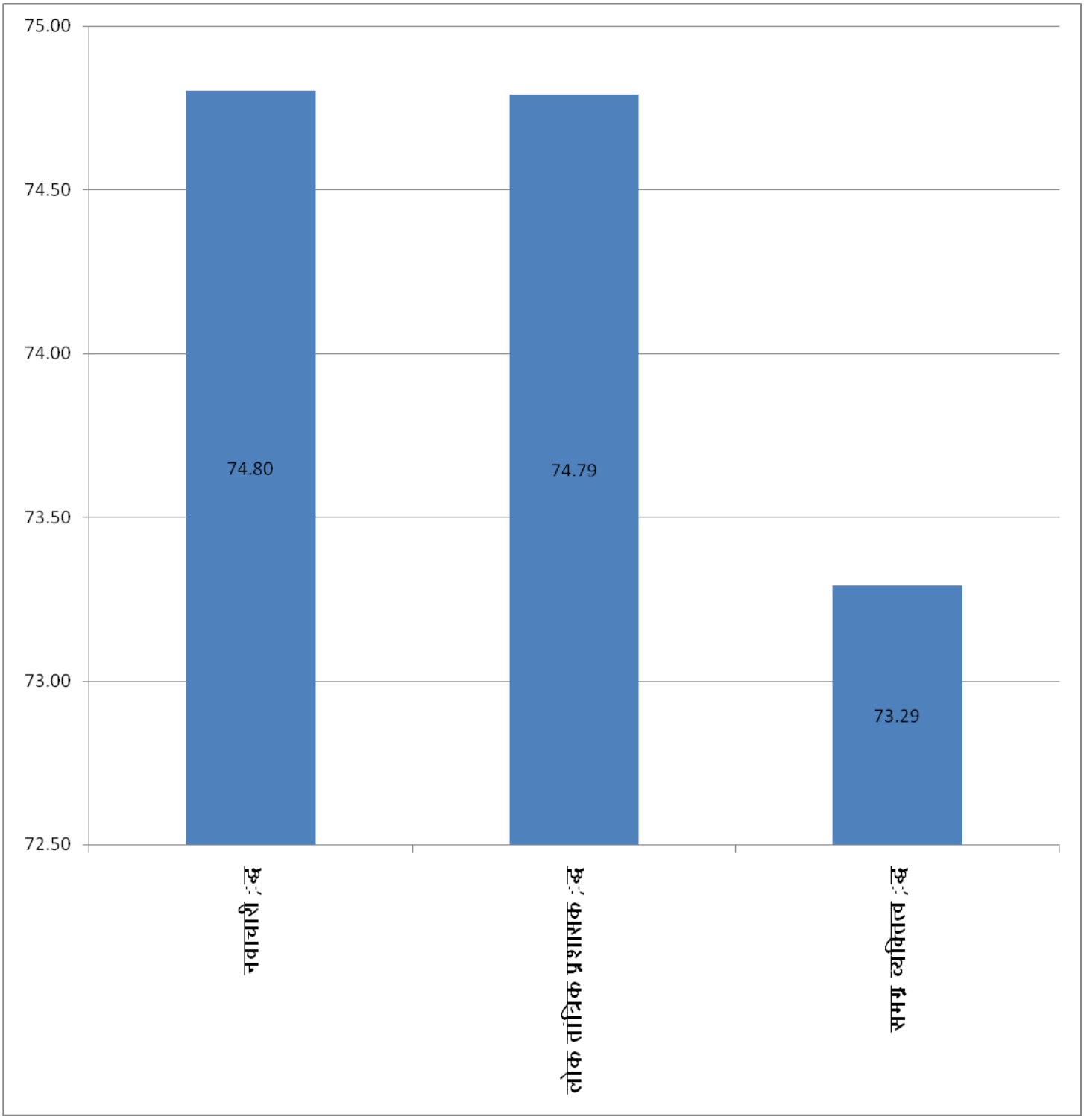

Student Feedback about Teachers: Analysis Report – 2016-17

महाविद्यालय की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने हेतु निम्नानुसार दिशा निर्देश दिए गए –

(1) **नवाचार –** मुख्यतः शैक्षणिक कियाकलाप पाठ्यक्रम के इर्द–गिर्द घुमते रहते है अतः पाठयक्रम में यह संभावना होनी चाहिए कि वे नवाचार को प्रोत्साहित करें। साथ ही साथ मूल्यांकन पद्धति भी नवाचार को करने का एक कारक हा सकता है। महाविद्यालय निरंतर विश्वविद्यालय के साथ इन मुद्दों को लेकर चर्चा करता है आने वाले वर्षो में इस दिशा में और अधिक ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। शिक्षक प्रशिक्षकों को नवाचार करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

(2) **लोकतांत्रिक प्रशासन –** शिक्षक प्रशिक्षकों को निरंतर कक्षा का वातावरण प्रजातांत्रिक बनाने हेतु प्रेरित किया जा रहा है।

(3) **समग्र व्यक्तित्व –** व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

Annexure – 2 (iii)

Feedback of Teacher Educator

2016-17

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

S S

Coordinator

Mrs. Shephali Mishra

Govt. College of Teacher Education (CTE)

संकाय सदस्यों के प्रतिपुष्टि (Feedback) का विश्लेषण

स.क्र.	विवरण		अति उत्तम	बहतु अच्छा	अच्छा	औसत	खराब
1	विभाग / कक्षा वातावरण	फर्नीचर	9.09%	54.55%	36.36%		
		वेन्टिलेशन (खिड़की आदि)	9.09%	54.55%	36.36%		
		प्रकाश व्यवस्था	9.09%	63.64%	18.18%	9.09%	
2	विभागाध्यक्ष एवं अन्य का व्यवहार	प्राचार्य	81.82%	18.18%	-		
		अन्य प्राध्यापक / सहा.प्राध्यापक / व्याख्याता / शिक्षक	63.64%	36.36%	-		
		अशैक्षिक स्टॉफ	54.55%	45.45%	-		
3	आधारभूत उपलब्धता	बैठक व्यवस्था	9.09%	63.64%	27.27%		
		निर्धारित पाठ्यक्रम	18.18%	63.64%	18.18%		
		ग्रंथालय व्यवस्था	-	72.72%	27.27%		
		प्रसाधन व्यवस्था	9.09%	63.64%	27.27%		
		पीने का पानी	9.09%	72.77%	18.18%		
		कैंटिन	9.09%	54.55%	18.18%	18.18%	
4	विभागाध्यक्ष द्वारा सूचनाओं का आदान–प्रदान	विभागाध्यक्ष	27.27%	36.36%	36.36%		

संकाय सदस्यों के प्रतिपुष्टि (Feedback) का विश्लेषण

महाविद्यालय की गुणवत्ता के उन्नयन के लिए निम्नलिखित चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता पाई गई –

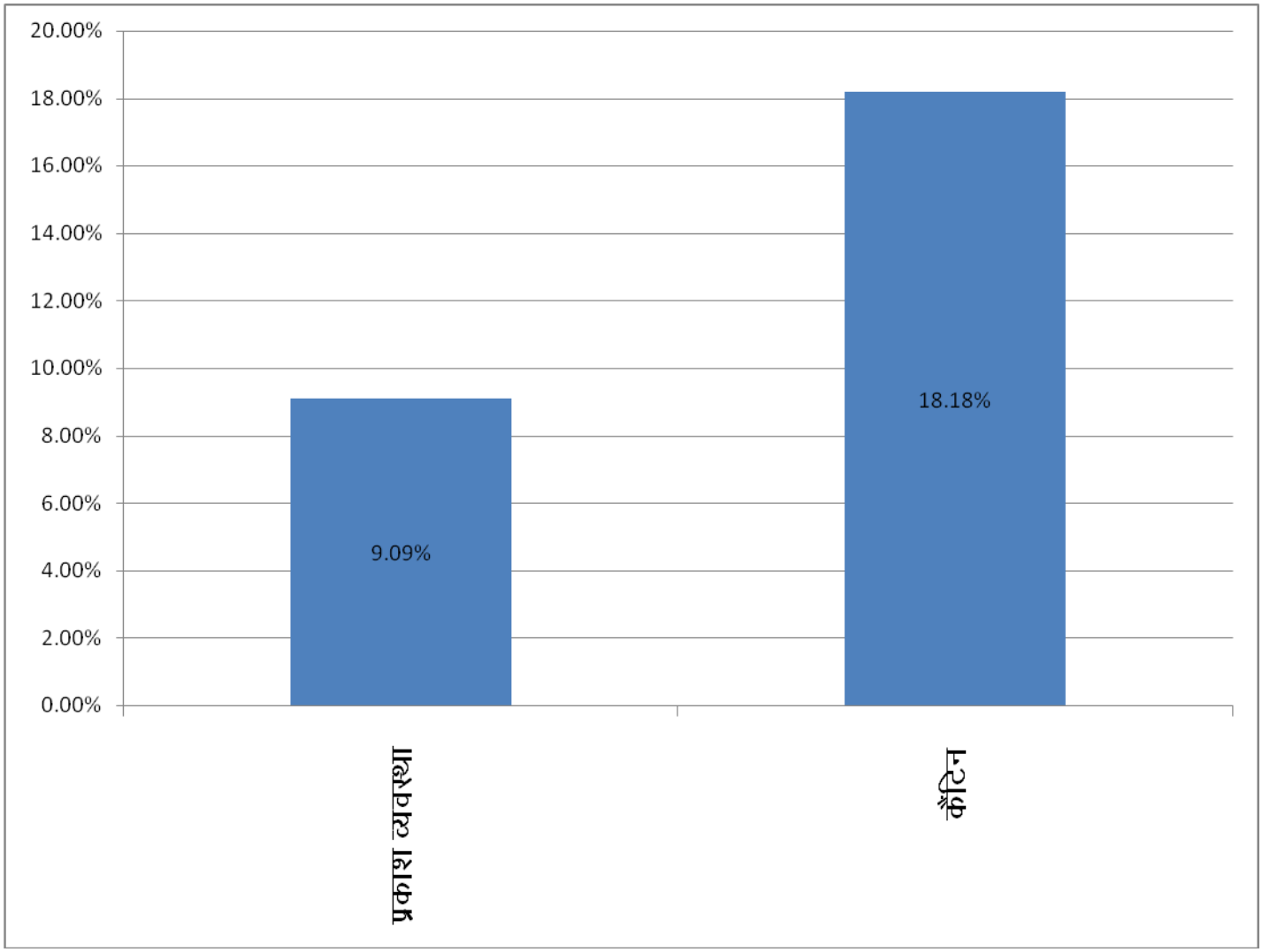

Teacher Educators Feedback: Analysis Report – 2016-17

महाविद्यालय की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु चिन्हांकित क्षेत्रों में कार्य करने हेतु निम्नानुसार दिशा निर्देश दिए गए –

(1) **प्रकाश व्यवस्था –** कक्षाओं में अच्छी प्रकाश व्यवस्था हेतु प्रकाश व्यवस्था प्रभारी को निर्देशित किया गया। Tubelight एवं Bulbs को नियमित रूप से Check करने एवं खराब पाए जाने पर तुरंत Replace करने निर्देशित किया गया।

(2) **केंटिन –** केंटिन प्रभारी को केंटिन के खाद्य पदार्थो की नियमित जॉच हेतु निर्देशित किया गया।

Annexure – 2 (iv)

Alumni Feedback – 2016-17

सारणी–1

S.No.	Subject	SA	A	NO	D	SD
1	I am proud of having studied I this college.	66%	34%	-	-	-
2	There existed cordial relation between the staff and student.	32%	66%	2%	-	-
3	The institution helped me to fullfil my ambition of becoming a teacher.	40%	58%	-	2%	-
4	The cource helped me in improving my profesional abilities.	42%	58%	-		-
5	The internal assesment of this college is balanced and objective.	24%	76%	-	-	-
6	The library facility are adequate.	42%	50%	8%	-	-
7	The teachers made a comrehensive evaluation of the teaching competencies of the students.	28%	68%	4%	-	-
8	The teacher devoted extra time to render guidance.	32%	62%	6%	-	-
9	Teacher adopted several inovativepractices while teaching.	26%	68%	6%	-	-
10	The thought for the day, Programmes and seminars were very helpful in developing independendant and critical thinking	30%	66%	4%	-	-
11	The infrastructure facility were adequate.	20%	74%	2%	4%	-
12	The educational tour proved to be informative.	28%	60	4%	4%	4%
13	There was ample opportunity to take part in extra curricular activities.	20%	70%	10%	-	-
14	Healthy competition was ensured by the grouping of the student into the houses.	30%	62%	4%	4%	-
15	There are adequate facility for physical training and games.	14%	58%	24%	4%	-
16	The college organized variouse extension programmes.	40%	56%	4%	-	-
17	The organization of variouse clubs in the college encouraged me to develop inttelectual and social skill.	34%	62%	4%	-	-
18	Top scores in the University examination are felicitated.	32%	62%	6%	-	-
19	Discipline was properly maintained in the college campus.	50%	48%	2%	-	-
20	I often cherished gloriouse moments of my life in the college.	48%	48%	4%	-	-

भूतपूर्व छात्राध्यापको द्वारा प्राप्त फीडबैक मे उदासीनता के क्षेत्र

S.No.	Subject	Percent
1	There are adequate facility for physical training and games.	24%
2	There was ample opportunity to take part in extra curricular activities.	10%
3	The library facility are adequate.	8%
4	The teacher devoted extra time to render guidance.	6%
5	Teacher adopted several inovativepractices while teaching.	6%
6	Top scores in the University examination are felicitated.	6%

उदासीनता के क्षेत्र का विश्लेषण

- शारीरिक शिक्षा एवं खेल हेतु पर्याप्त सुविधाओं की उपलब्धता पर 24 प्रतिशत सदस्यों न उदासीनता व्यक्त की है ।
- 10 प्रतिशत भूतपूर्व छात्राध्यापकों ने पाठ्यसहगामी क्रियाओं के लिए पर्याप्त अवसर पर उदासीनता व्यक्त की है ।
- 8 प्रतिशत भूतपूर्व छात्राध्यापकों ने पुस्तकालय सुविधा पर उदासीनता व्यक्त की है ।
- शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन हेतु अतिरिक्त समय दिये जाने के संबंध में 6 प्रतिशत भूतपूर्व छात्राध्यापकों ने उदासीनता व्यक्त की है ।
- शिक्षकों द्वारा शिक्षण के दौरान नवाचारी प्रयोग किये जाने पर 6 प्रतिशत भूतपूर्व छात्राध्यापकों ने उदासीनता व्यक्त की है ।
- विश्वविद्यालय परीक्षा में उच्च स्थान प्राप्त करने पर शुभकामना देने हेतु 6 प्रतिशत भूतपूर्व छात्राध्यापकों ने उदासीनता व्यक्त की है ।

फीडबैक से उदासीनता के क्षेत्र में सुधार हेतु महाविद्यालय द्वारा किये गये प्रयास –

- महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा के लिए पृथक से क्रीडा कक्ष की व्यवस्था की गई। इनडोर गेम में टेबल टेनिस , कैरम, चेस की व्यवस्था की

गई तथा आउटडोर गेम हेतु बैडमिंटन एवं वॉलीबाल कोर्ट तैयार किया गया। इन सभी गतिवधियों हेतु अंतिम कालखण्ड का समय निर्धारित किया गया है।

- शून्यकालखण्ड में विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं पर कार्य करने का निर्णय लिया गया।
- पुस्कालय सुविधा हेतु 'ई–लाईब्रेरी' के उपयोग को और अधिक प्रोत्साहित करने का कार्य किया जाएगा।
- नवाचारी शिक्षण के तहत कक्षा –कक्ष में स्मार्ट बोर्ड की व्यवस्था की गई , महाविद्यालय को वाई–फाई जोन बनाया गया । Collaborative Teaching Project कार्य आदि कराएं जा रहे है ।
- विश्वविद्यालय में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्राध्यापकों समय–समय पर महाविद्यालय में आमंत्रित कर सम्मानित करना।

बैठक का एजेण्डा

बैठक में भूतपूर्व छात्राध्यापकों ने गुणवत्ता प्रबंधन हेतु निम्नांकित एजेण्डा तैयार किया –

1. आजीवन सदस्यता हेतु भूतपूर्व छात्राध्यापकों को प्रेरित करना ।
2. सहायक शिक्षण सामाग्री निर्माण प्रशिक्षण में भूतपूर्व छात्राध्यापकों का योगदान लेना ।
3. महाविद्यालय के विकास तथा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योजना बनाना ।
4. भूतपूर्व छात्राध्यापकों को महाविद्यालय की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में निरंतर सहभागिता हेतु प्रेरित करना ।
5. त्रैमासिक/अर्धवार्षिक एल्युमिनाई बैठक का आयोजन ।
6. भूतपूर्व छात्राध्यापकों की शैक्षिक समस्याओं को सूचीबद्ध कर निदान हेतु नीति का निर्माण ।

बैठक में अर्धवार्षिक व आवश्यकतानुसार त्रैमासिक बैठक कराने पर सहमति व्यक्त की गई ।

Annexure – 2 (v)

पालकों का फीडबैक

2016–17

महाविद्यालय की गुणवत्ता तीन क्षेत्रों से प्रभावित होती है जिसमें छात्राध्यापक पालन, अकादमिक सदस्य, सम्मिलित है इनमें से कोई भी क्षेत्र का समावेश यदि न हो तो महाविद्यालय की गुणवत्ता प्रभावित होती है ।

महाविद्यालय में पालकों के अभिमत और दृष्टिकोण से अवगत होने के लिए पालक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिससे महाविद्यालय अपनी कमियों तथा उपलब्धि का विश्लेषण कर महाविद्यालय की गुणवत्ता सुनिश्चित कर सकें ।

उद्देश्यः–

1. छात्राध्यापकों के विकास में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने में पालकों की मदद लेना ।
2. महाविद्यालय की गतिविधियों में पालकों को सम्मिलित करना ।
3. महाविद्यालय के कार्यो में गुणवत्ता लाने हेतु पालकों का मत लेना ।

पालकों के सम्मेलन आयोजन तिथि –22–04–2017

पालक फीडबैक का विश्लेषण

दिनांक 22–04–2017 को महाविद्यालय में पालक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें पालकों ने महाविद्यालय की अच्छाईयों पर प्रशंसा की तथा विभिन्न गतिविधियों पर अपने अभिमत दिए।

पालकों ने निम्न गतिविधियों पर अपना अभिमत दिए –

1. प्रशिक्षार्थी को पुरस्कृत करना ।

2. खेल संबंधी गतिविधियाँ ।

3. पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ।

पालको द्वारा फीडबैक के आधार पर सभी क्षेत्रों का विश्लेषण निम्नानुसार है–

सारणी–1

अभिभावकों द्वारा प्राप्त फीडबैक में सकारात्मक मुद्दों का विवरण

क्र.	क्षेत्र	प्रतिशत
1	महाविद्यालय का वातावरण अच्छा है	100
2	महाविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था ठीक है	98
3	प्रशिक्षण के दौरान आने वाली समस्यों का समाधान करना	97
4	पीने के पानी की उचित व्यवस्था	96
5	महाविद्यालय में अनुशासन व्यवस्था	96
6	बलिका को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास	90
7	पाठ्य सहभागियों क्रियाओं से संतुष्ट	89

सारणी 1 का आरेख

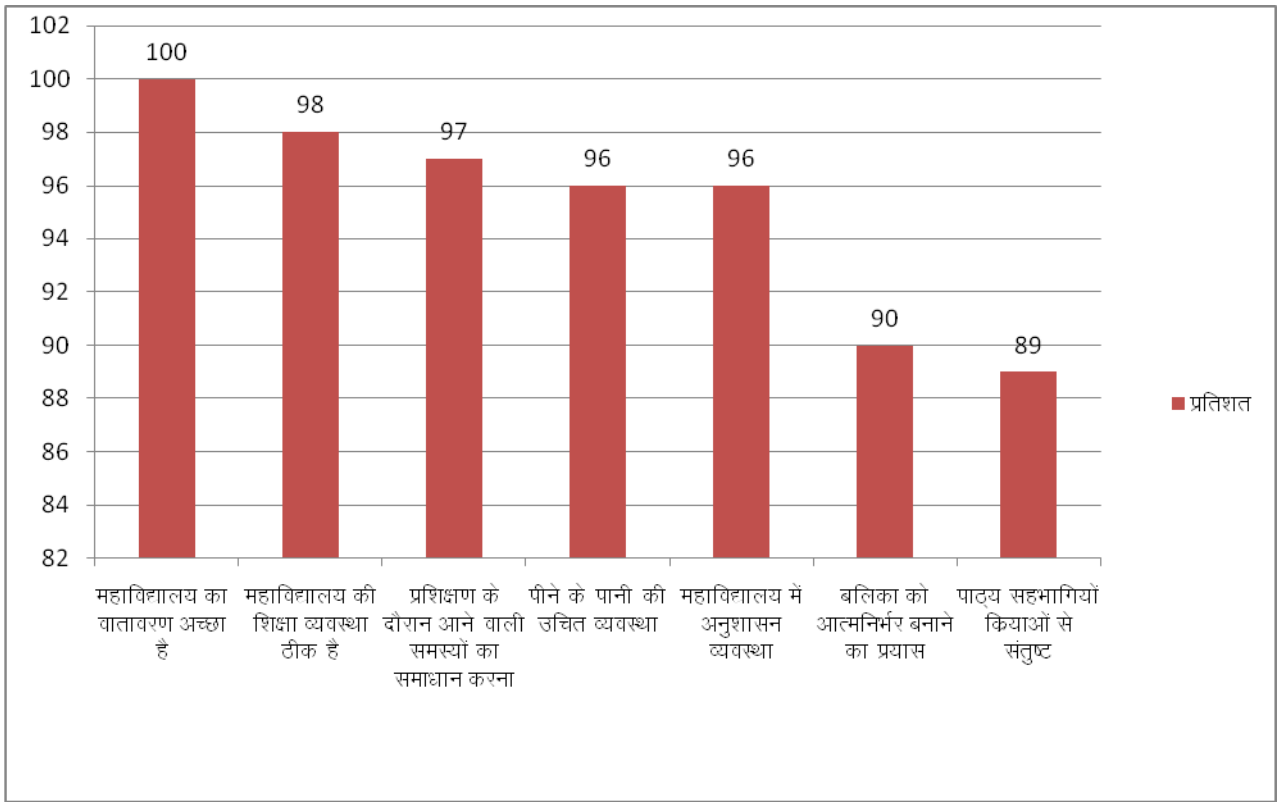

सारणी–2

अभिभावकों द्वारा प्राप्त फीडबैक में विविध मुद्दों का विवरण

क्र	क्षेत्र	प्रतिशत
1	प्रशिक्षार्थी को पुरस्कृत किया जाना	50
2	प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने पर्याप्त अवसर	49
3	अवागमन के साधन	50
4	महाविद्यालय में समयबद्धता को लेकर लचीलापन	42
5	प्रशिक्षार्थी को पुरस्कृत नहीं किया जाता	28
6	खेलकुद के लिए मैदान का उपयोग नहीं	17
7	खेलकूद के अवसर पर्याप्त नहीं है	15
8	महाविद्यालय के निर्धारित शुल्क से असंतुष्ट	14
9	बैठक व्यवस्था नही है	13

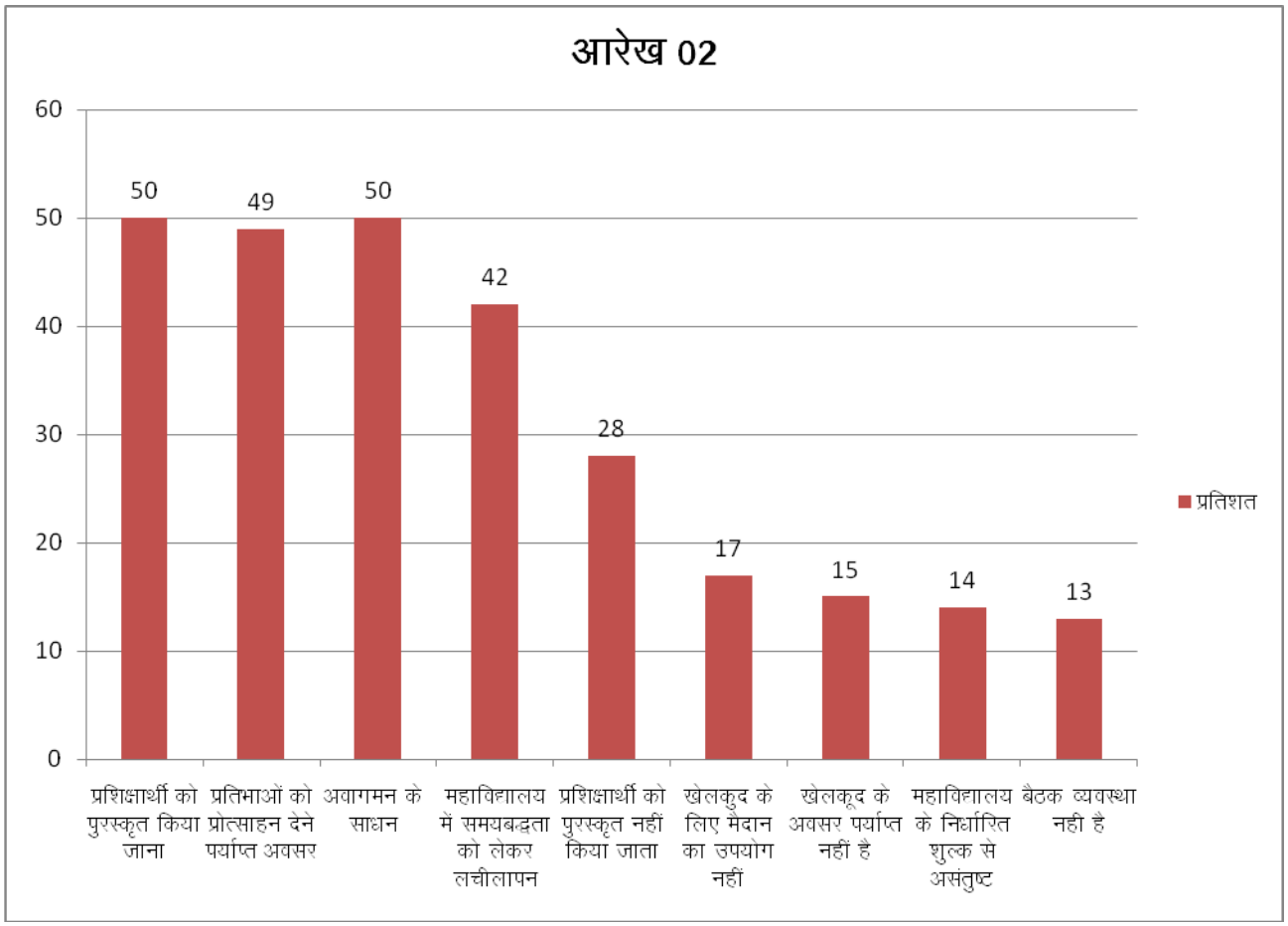

उपरोक्त वितरण के आधार पर पालको का दृष्टिकोण निम्नानुसार है:–

- 100% पालक महाविद्यालय के वातावरण से संतुष्ट हैं तथा पूर्ण सहमति प्रदान किए हैं।
- 98% पालक महाविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था से सहमत है तथा मात्र 02% पालक असहमत है ।
- प्रशिक्षण के दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान करने पर 97% पालक सहमत है परंतु 03% पालक असहमत है ।

- 96% पालक महाविद्यालय के अनुशासन व्यवस्था संतुष्ट है परंतु **4**% पालक सहमत नहीं है ।
- पीने के पानी की उचित व्यवस्था पर 96% पालक सहमत है पर 4% पालक असहमत है ।
- बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तथा छात्राध्यापक के प्रतिभा को प्रोत्साहन देने के लिए **90**% पालक सहमत है परंतु 10% पालक सहमत नहीं है ।
- 89% पालक महाविद्यालय के पाठ्यसहगामी क्रियाओं से संतुष्ट हैं जबकि **11**% पालक सहमत नहीं है ।

पालकों के सुझाव के आधार पर महाविद्यालय की रणनीति

1. विभिन्न खेल गतिविधि के लिए खेल के मैदान का उपयोग राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण नहीं हो पा रहा है । इन कठिनाईयों के बावजूद महाविद्यालय के पीछे के क्षेत्र का उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है ।

2. छात्राध्यापकों को पुरस्कृत करने हेतु कार्य किया जा रहा है जिसमें सभी छात्राध्यापकों को पुरस्कृत करने की योजना बनाई जा रही है जिससे अन्य छात्राध्यापक हतोत्साहित न हो तथा सभी का मनोबल बढ़े ।

3- पुस्तकालय को ई–पुस्तकालय में बदला गया तथा अधिक से अधिक पाठकों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

Annexure – 3 (i)

LEARNING CAMP

मूल्यांकन दल

१. देवयानी शुक्ला

२. शेष शुभ वैष्णव

३. भारती दुबे

४. देवेन्द्र कुमार यदु

५. अब्दुल कादिर

६. हेमंत कुमार साहू

संरक्षक :

श्री योगेश शिवहरे

प्राचार्य शा. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

समन्वयक गण :

१. श्री सुनील मिश्रा
२. श्रीमती योगेश्वरी महाडिक
३. श्रीमती मधु दानी

प्रशिक्षक गण :

१. श्री तारकेश्वर देवांगन
२. श्री मनीष मिश्रा

संयोजन समिति :

१. श्रीमती प्रीति जैन
२. लक्ष्मी देवांगन
३. श्रीमती प्रतिमा अग्लावे
४. श्रीमती सीमा साहू
५. श्रीमती गुलाब विश्वकर्मा
६. श्री हीराराम साहू
७. श्री मोहन ज्योति साहू
८. श्री मनोज कुमार पण्डा
९. श्री राजकुमार आवले

प्रस्तावना

"मैंने सुना,मैं भूल गया |

मैंने देखा ,मुझे याद रहा |

मैंने किया ,मुझे आ गया ||"

प्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के इस कथन का मूर्त रूप पिछले दिनों शास.शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर के तत्वावधान में आयोजित 'लर्निंग कैम्प' में दिखाई दिया |

दिनाँक 28/2/17 को महाविद्यालय प्रांगण में रायपुर जिले के धरसीवां विकासखंड के लगभग 33 प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों द्वारा सीखने के मनोरंजक व रोचक तरीकों का प्रदर्शन किया गया | जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह आयोजन प्रदर्शनी अथवा बाल मेला नहीं अपितु अधिगम शिविर था जिसके लाभार्थियों में प्रतिभागी शालाओं के लगभग 2000 विद्यार्थी और शिक्षकगण, **शा. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय** के बी.एड. व एम.एड. के सभी प्रशिक्षार्थी, प्राध्यापक गण , प्राचार्य **शा. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय**, प्राचार्य जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर, विकास खंड शिक्षा अधिकारी धरसींवा, तथा स्कूल शिक्षा मंत्री श्री केदार कश्यप जी भी सम्मिलित थे |कैम्प में प्राथमिक शालाओं के कुल 37 तथा पूर्व माध्यमिक शालाओं के कुल 24 स्टॉल्स में पाठ्यक्रम के सभी विषयों से संबंधित गतिविधियाँ थीं |

उद्देश्य

- आनन्ददायी शिक्षा की स्पष्ट समझ बनाना |
- गतिविधि आधारित शिक्षा के लिए प्रेरित करना |
- गतिविधि आधारित शिक्षा के लिए शिक्षकों को प्रयोग करके दिखाना |
- शिक्षा को व्यवाहरिक जीवन से जोड़ना |
- बाल केन्द्रित शिक्षा के लिए प्रेरित करना |
- रटंत प्रणाली से मुक्ति |
- सिखने के स्त्रोतों का विस्तार करना |
- अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता की अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित करना |
- अधिगम हेतु भयमुक्त वातावरण निर्मित करना |
- अधिगम की दिव्मुखी प्रक्रिया में दोनों ओर छात्रों की उपस्थिति |
- कम समय में पाठ्यक्रम के अधिक से अधिक पाठों का प्रभावी ढंग से शिक्षण |
- आकलन एवम मूल्यांकन को सहज तथा मनोरंजक बनाना |
- छात्रों के अंत:क्रियाओं को सिखने से जोड़ना |
- अधिगम अभ्यास अवसरों को सहज और सरल बनाना |
- छात्रों के अंतरनिहित प्रतिभाओ को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना |

मूल्यांकन के आधार

लर्निंग कैम्प के तृतीय पक्ष मूल्यांकन हेतु दो दल का गठन किया गया था | दलों को मूल्यांकन हेतु कुछ मापदंड निर्धारित किये गये जिनमे प्रमुखत: आधारभूत अवधारणा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 व् यशपाल समिति 1995 को आधार माना गया है | राष्ट्रीय पाठयचर्या की रुपरेखा 2005 के मार्गदर्शक सिधान्तों के अनुसार-

१. ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना,
२. पढाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना,
३. पाठ्यचर्या का इस तरह सम्वर्धन हो कि वह बच्चों को चहुंमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि वह पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित बन कर रह जाए,
४. परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा कि गतिविधियों से जोड़ना,
५. एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताए समाहित हो

मूल्यांकन दल ने पाया कि राष्ट्रीय पाठयचर्या की रुपरेखा 2005 के मार्गदर्शक सिधान्तों की झलक कैम्प में स्पष्ट रूप से दिख रही थी तथा बच्चे इस लर्निंग कैम्प को एक आनंददायी सिखने के मेले के रूप में ले रहे थे |

इसके साथ साथ यशपाल समिति 1995 के सुझाव जिनमे यह कहा गया कि एक पाठ्यक्रम बच्चों के लिए बोझिल साबित होता है जब-

(क) यह लंबी सामान्य परिस्थितियों में एक सामान्य शिक्षक द्वारा औसत समय में पूरा किया जाता है;

(ख) यह विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के साथ पाठ्यक्रम सामग्री की अवधारणाओं की कठिनाई स्तर के बीच मेल नहीं होता है;

(ग) पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा समझ से बाहर हो और प्रस्तुति की शैली सरल और सीधे के बजाय जटिल और नीरस हो;

(घ) पाठ्यक्रम, विकास के अंतर्निहित बुनियादी मान्यताओं को पूरा नहीं कर रहे हो।

विस्तार से पाठ्यक्रम के बोझ की समस्या का अध्ययन करने के बाद, यशपाल समिति ने अस्तित्व की अभिव्यक्ति के समस्या के रूप में निम्नलिखित की पहचान की हैं:

१ . बस्ते के बोझ

जहां तक बस्ते के बोझ का संबंध है, पिछले कुछ वर्षों में स्थिति और भी बदतर हो गई है। हालांकि, बस्ते का वजन, समस्या का एक पहलू है ,और दुसरा पहलू बच्चे की दैनिक दिनचर्या में देखा जा सकता है जो होमवर्क, ट्यूशन और विभिन्न प्रकार के कोचिंग कक्षाओं में उपस्थिति से सम्बम्धित है।

यह कैम्प न केवल बस्ते के बोझ को कम कर रहा था अपितु समस्त स्कूली व्यवस्था के वजन को भी कम कर सिखने सिखाने को एक मनोरंजक व तनावरहित पर्व के रूप में परिलक्षित कर रहा था |

२ . परीक्षा प्रणाली

परीक्षा प्रणाली का स्पष्ट और प्रमुख दोष यह है कि यह बच्चों के लिए अपरिचित, नई समस्याओं पर अवधारणाओं और जानकारी को लागू करने या सोचने,समझ बनाने के स्थान पर जानकारी को पुन: पेश करने की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करता है। दोनों, शिक्षक और माता पिता लगातार परीक्षा के भय और पाठ्यपुस्तक और गाइड पुस्तकों कि पूरी जानकारी को याद रखने पर बल देते रहते हैं| परीक्षा के प्रति ऐसी धारणाए बच्चों के लिए चीजों को और कठिन बना देती है।

कैम्प के कई स्टालों में ऐसी गतिविधियाए हो रही थी जो मूल्यांकन के बेहतर विकल्प के रूप में सामने आ रही थी जिनमे बच्चे बहुत मजे ले रहे थे तथा उन्हें सही या गलत होने का कोई भय नही था |

३ . उत्साहहीन सीखना

ज्यादातर हमारे स्कूल जा रहे बच्चों अधिगम को एक नीरस, अप्रिय और कड़वा अनुभव के रूप में देखते हैं। परीक्षा के लिए पढने का सीमित उद्देश्य वास्तव में सीखने के अप्रिय होने का महत्वपूर्ण कारक है। बाल-केंद्रित शिक्षा और गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम विधि के बारे में बातें तो होती हैं, लेकिन शायद ही कभी हमारे स्कूल में इनका अभ्यास होता हैं।

गतिविधियाँ रोचक व उत्साहपूर्ण प्रतीत हो रही थी गलत जवाब देने वाले बच्चे भी हर स्टाल पर प्रयास कर रहे थे तथा स्टाल के बच्चों से सही जवाब प्राप्त कर ज्ञान का आदान प्रदान कर रहे थे | शायद ही कोई बच्चा था जो स्टालों में जाने में रूचि नहीं दिखा रहा था|

४ . पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक

पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों ठीक से तैयार न हो, तो पाठ्यक्रम बोझिलता की समस्या पैदा होती हैं। यह देखा गया है कि पाठ्य पुस्तकों में अवधारणाओं के उच्च घनत्व है और लिखने की शैली बहुत संक्षिप्त है। कुछ मामलों में पुस्तकों में भाषा का इस्तेमाल कई छात्रों की समझ से परे होती है।

कैम्प के प्रत्येक स्टॉल का मुख्य ध्येय था खेल खेल में सीखना और सिखाना | विषयों ,गतिविधियों और स्तरों में भिन्नता होने के बावजूद सभी स्टॉलों में कुछ समानताएँ भी थीं,जैसे सभी स्टॉलों में दर्शकों से चिट निकालकर खेल में भाग लेने को प्रेरित किया जा रहा था | इन खेलों के विजेता दर्शकों को टॉफियाँ देकर पुरस्कृत किया जा रहा था | प्रत्येक दर्शक का विवरण और सुझाव पूरी तत्परता एवं गंभीरता से पंजीबद्ध किया जा

रहा था | सबसे बड़ी बात यह थी कि ये सभी काम बच्चे स्वयं कर रहे थे और सभी बच्चे ऊर्जा और उत्साह से भरे हुए थे |

पाठ्यपुस्तक में जो बातें औपचारिक और परिष्कृत भाषा में है बच्चे उन्हें सहज रूप से अपने दैनिक बोल चाल की भाषा में बोल कर, अपनी क्षेत्रीय बोली में बोल कर ज्ञान का आदान प्रदान कर रहे थे |

अवलोकन बिंदु

लर्निंग कैम्प की सार्थकता की समीक्षा हम कुछ बिंदुओं के आधार पर कर सकते हैं .....

1) बच्चों के सीखने के लिए सार्थकता :

सभी गतिविधियों का संचालन बच्चे स्वयं कर रहे थे | चाहे वो उनके हमउम्र बच्चे हों,शिक्षक हों ,महाविद्यालय के विद्यार्थी हों ,प्राध्यापक हों

प्राचार्य हों या स्वयं शिक्षा मंत्री ,वे पूरे आत्मविश्वास और धैर्य से अपनी प्रस्तुति दे रहे थे | ऐसा आत्मविश्वास हमारी तैयारी तथा स्पष्ट अवधारणा का द्योतक होता है |एक स्टॉल में बच्चे चिट निकालते और उसमें लिखे अंक का पहाड़ा पढ़ते हुए रस्सी कूदते,जहाँ एक

ओर वे खेल रहे थे वहीं दूसरी ओर वे पहाड़ा दोहरा रहे थे | सीखने के लिए यह कैम्प उपयोगी रहा ।

2) यह कैम्प शिक्षकों के लिए भी बहुत प्रेरणादायी रहा क्योंकि प्रत्येक गतिविधि अधिगम को सरल तथा शिक्षण को मनोरंजक बनाने के तरीका बता रही थी और उन्हें नवाचार के लिए प्रेरित कर रही थी |

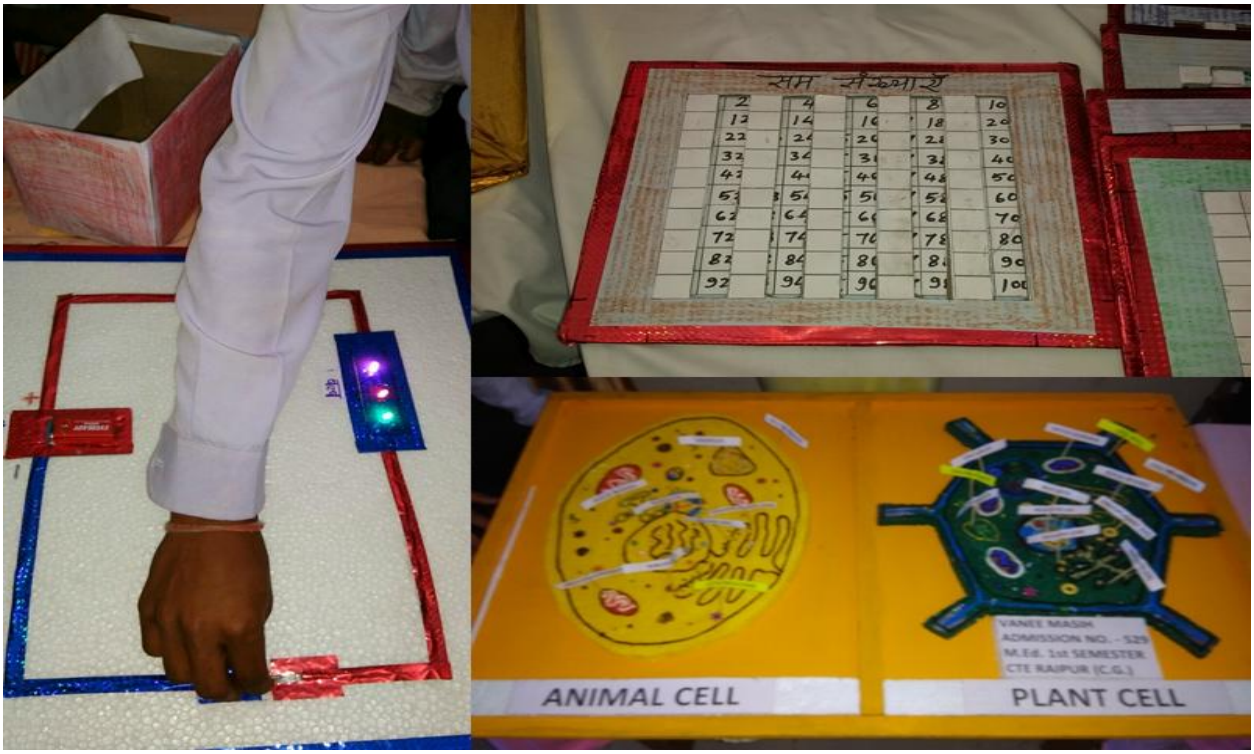

3) डी.एड.,बी.एड.,और एम.एड,प्रशिक्षार्थियों के लिए भी यह कैम्प उपयोगी रहा क्योंकि भावी शिक्षक हों या सेवारत शिक्षक ,शिक्षण की नवीन विधियों तथा बच्चों की रुचियों का ज्ञान होना ,एक अच्छे शिक्षक के लिए अत्यंत आवश्यक है और कैम्प में शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया में रोचकता और नवीनता लाने के कई मनोरंजक तरीके प्रदर्शित किए गए |

4)"what we learn with pleasure , we never forget" Alfred mercier
"जो कुछ भी हम खुशी-खुशी सीखते हैं ,उसे हम कभी नहीं भूलते |"अल्फ्रेड मर्सीयर

लर्निंग कैम्प की गतिविधियाँ निश्चित ही बच्चों की सीखने गति पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम रहीं | खेल खेल में सीखने से बच्चे जल्दी और सरलता से सीख पाते हैं |

5) जब अधिगम रोचक होता है ,तो पाठ्यक्रम भी अपनी गति पकड़ कर समय पर पूर्णता प्राप्त कर लेता है |इस प्रकार यह कैम्प पाठ्यक्रम को पूरा करने में भी सहायक रहा |

6) सेवारत शिक्षकों के उद्यमगत विकास, निरंतर नवीनीकरण एवं कौशल दक्षताओं में उन्नयन के लिए विभिन्न शिक्षक-प्रशिक्षण
दिए जाते हैं |
लर्निंग कैम्प learning with fun, active learning , learning by doingजैसे नवाचार का प्रत्यक्ष परीक्षण तथा प्रदर्शन था | इससे निश्चय ही शिक्षक प्रशिक्षणों को क्रियाशील एवं रचनात्मक बनाने में सहायता मिलेगी | कैम्प में प्रदर्शित गतिविधियों से आगामी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए रोचक गतिविधियाँ तैयार करने में प्रेरणा मिलेगी |

7)कैम्प में गणित और विज्ञान विषयों से संबंधित स्टॉल्स में कई अनोखी और मज़ेदार तकनीकों का प्रयोग किया गया,जैसे आईसक्रीम स्पून से गिनती करना,कीलों और रबरबैंड से ज्यामितीय आकृतियाँ बनाना,कार्डबोर्ड से भिन्नों का योग करना,विद्युत परिपथ से चालकता की जाँच,बिंदु मिलाकर पहाड़े बनाना,रस्सी कूदो पहाड़े बोलो,स्टिक की सहायता से गुणा करना,नक्शा अभ्यास आदि ।

8) एन.सी.एफ.2005 में पाठ्यक्रम को सीखने के विभिन्न चरणों के अनुरूप बनाया गया है।

प्राथमिक स्तर पर जोर इस बात पर दिया गया है कि संसार (प्राकृतिक परिवेश,कृत्रिम रचनाएँ और लोग) के प्रति बच्चे के कौतूहल को बढ़ावा मिले। संसार को पहचानने की उसकी बुनियादी क्षमताओं - जैसे निरीक्षण करना, वर्गीकरण करना और निष्कर्ष निकालना आदि के साथ-साथ उसमें अपने हाथ जैसे अंगों से काम लेने के कौशल का भी विकास हो। बच्चों के लिए “भाषा” सीखना भी महत्वपूर्ण है।

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के स्तर पर, बच्चे को इस प्रयास में संलग्न किया जाना चाहिए कि वह अपने परिचित अनुभवों के माध्यम से विज्ञान के सिद्धान्तों को समझे। साथ ही खुद अपने हाथों से छोटी-छोटी तकनीकी इकाइयों और मॉड्यूलों की रचना

करे और उन्हें प्रदर्शनियों आदि के माध्यम से दिखाना - ये सभी शिक्षण प्रक्रिया के महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए।

लर्निंग कैम्प में उपर्युक्त सभी सुझावों का सफलतापूर्वक का क्रियान्वयन दिखाई दिया। प्राथमिक स्तर पर अंकों की पहचान,रंगों की पहचान,जोड़ना-घटाना-गुणा भाग,अंग्रेजी शब्दों की पहचान,संस्कृत शब्दों की पहचान,समय और कैलेण्डर देखना आदि गतिविधियों के अतिरिक्त कला संबंधी गतिविधियाँ इन सुझावों पर क्रियान्वयन का सफल प्रयास था ।उच्च प्राथमिक स्तर पर मॉडल्स,चार्ट्स तथा विविध क्रियाकलापों के माध्यम से एन सी एफ की अनुशंसाओं को क्रियान्वित किया गया ।

9) बी.एड. के प्रशिक्षार्थियों के 'शाला अनुभव कार्यक्रम' तथा 'इंटर्नशिप कार्यक्रम' में इस कैम्प की क्या उपयोगिता है ,इस प्रश्न का उत्तर हमने बी.एड.प्रथम व द्वितीय वर्ष के छात्रों से जानने का प्रयास किया।प्रश्नों के जो उत्तर मिले,उसका सार इस प्रकार है : प्रशिक्षार्थियों का मानना है कि इस प्रकार के कैम्प से शाला अनुभव में tlm निर्माण और विषय संबंधी गतिविधियों के लिए नए नए विचार मिलते हैं ।प्रशिक्षार्थियों ने यह भी कहा कि ऐसे आयोजन उच्च माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भी होने चाहिए ।

हिंदी,अंग्रेज़ी तथा संस्कृत भाषाओं के अतिरिक्त शास.पी.जी.उमाठे पू.मा. कन्या शाला की बालिकाओं ने उर्दू भाषा सीखने के तरीके बताए,जो एक नया और सराहनीय कदम रहा |

इसके अतिरिक्त एक पुस्तकालय कॉर्नर भी था ,जिसे फिरतूराम वर्मा शास.पू.मा.शाला पंडरीतराई की बालिकाएँ संचालित कर रही थीं |यह कॉर्नर जहाँ एक ओर दर्शकों में रुचि एवं कौतुहल जागृत कर रहा था ,वहीं दूसरी ओर उनकी पढ़ने की गति और स्मरण शक्ति की परीक्षा भी ले रहा था | इस कॉर्नर के सबसे उल्लेखनीय दर्शक रहे ,स्कूल शिक्षा मंत्री श्री केदार कश्यप जी ; जिन्होंने गतिविधि में हिस्सा लिया और बालिकाओं ने बड़ी निर्भयता से उनसे सवाल भी किए |

इसके अतिरिक्त 4 स्टॉल्स कला से संबंधित थे,जिनमें शास प्राथ.शाला मठपुरैना के बच्चों द्वारा बारली कला , शास. प्राथ. शाला नकटी (सम्मानपुर) के बच्चों द्वारा पेपर आर्ट और मिट्टी कार्यशाला तथा शास प्राथ.शाला पिरदा के बच्चों द्वारा चित्र कला
का न केवल प्रदर्शन किया जा रहा था अपितु दर्शकों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर भी दिया जा रहा था |

गतिवधियों के शैक्षिक आधार

कैम्प के स्टालों में छात्रों द्वारा गतिविधियों द्वारा सिखने-सिखाने का क्रम निरंतर चल रहा था जिससे अधिगम बहुत सहज व आनन्दमय प्रतीत हो रहा था | अधिगम की दृष्टि से हम इन गतिविधियों औचित्य को चार श्रेणी में रख सकते है-

१. ज्ञान के सृजन के लिए
२. बेहतर समझ के लिए
३. अभ्यास के लिए
४. भयरहित मूल्यांकन एवम आकलन के लिए

कैम्प के स्टालों का विवरण

कैम्प में प्राथमिक शालाओं के कुल ३७ तथा पूर्व माध्यमिक शालाओं के कुल २५ स्टॉल्स में पाठ्यक्रम के सभी विषयों से संबंधित गतिविधियाँ थीं | जिनका विवरण निम्नानुसार है-

१. प्राथमिक शालाओं के स्टाल:

स.क्र.	विषय	स्टालों की संख्या
१	गणित	१५
२	भाषा	१३
३	कला	४
४	पर्या.विज्ञान	५

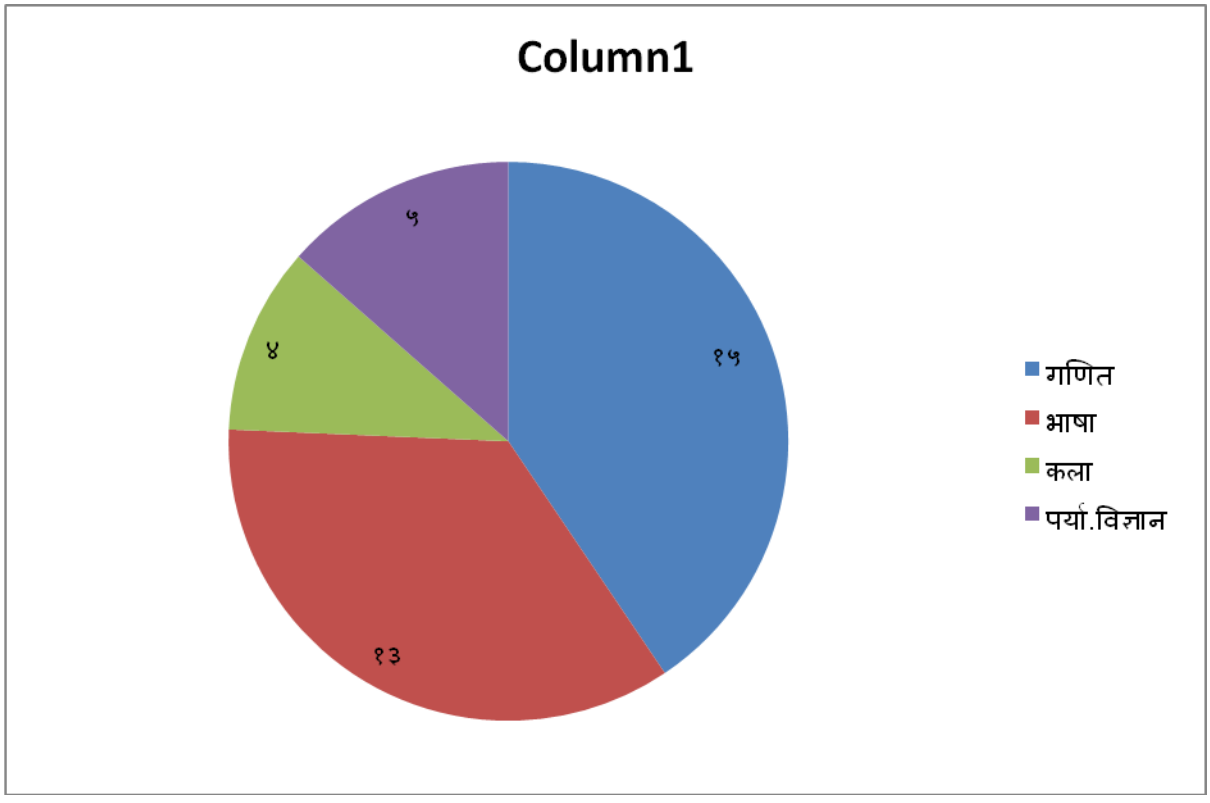

२. पूर्व माध्यमिक शालाओं के स्टाल:

स.क्र.	विषय	स्टालों कि संख्या
१	गणित	५
२	विज्ञान	११
३	हिंदी	२
४	अंग्रेजी	३
५	संस्कृत	२
६	सा. विज्ञान	२

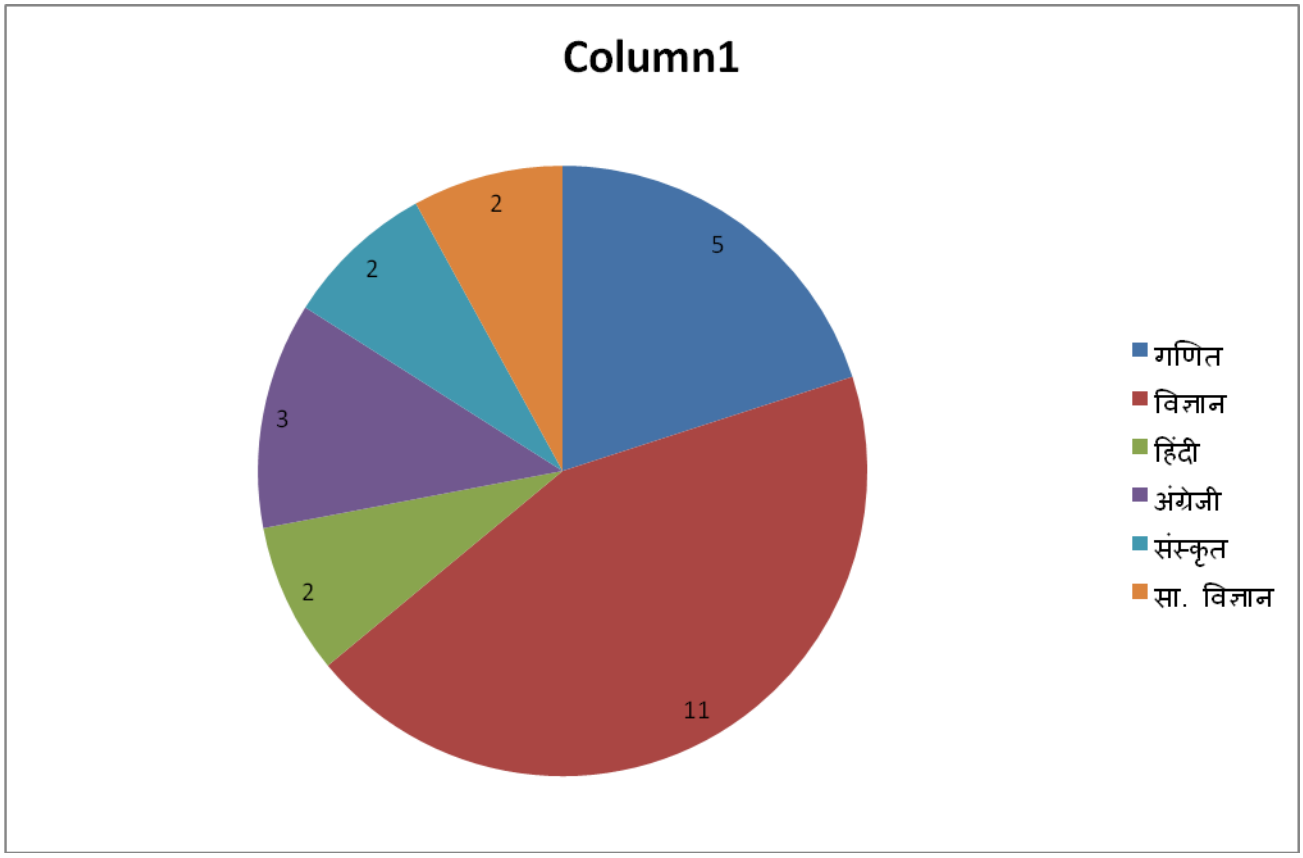

निष्कर्ष व सुझाव

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि यह कैम्प छ.ग.के 17 जिलों की नोडल संस्था शास.शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता विकास की ओर एक और सराहनीय एवं सार्थक कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। कहा जाता है कि सुधार की गुंजाइश हर जगह होती है; अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल इस कैम्प की बेहतरी के लिए दल द्वारा कुछ सुझाव है-

- यदि कैम्प किसी बड़े प्रांगण में होता तथा कैम्प में स्टाल क्रम अनुसार लगाए जाते और एक विद्यालय के सभी स्टाल्स एक ही जगह पर होते तो अव्यवस्था से बचा जा सकता था |
- साथ ही यदि ऐसा आयोजन छतीसगढ़ के १७ जिलो की नोडल संस्था शा. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर द्वारा विकास खंड स्तर पर हर जिले में किया जाय तो इसका लाभ व्यापक रूप से उठाया जा सकेगा |
- लर्निंग कैम्प के आयोजन तथा उचित नियोजन के लिए मार्गदर्शिका निर्माण कर कार्यक्रम के विस्तार हेतु ठोस कदम उठाये जाने चाहिए ताकि ऐसे आयोजन के प्रति आशान्वित व्यक्तियों एवम सोस्थानो को उचित मार्गदर्शन मिले |
- वर्तमान में सतत व व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत हर शनिवार को होने वाले बाल सभा के विकल्प के रूप में इस लर्निंग कैम्प को प्रस्तुत किया जाना चाहिए |

अंततः हम कह सकते है कि यह कैम्प एक्टिव लर्निंग विधि का सफल परिक्षण रहा तथा इस कैम्प को शिक्षा की गुणवत्ता विकास कि ओर एक और सराहनीय और सार्थक कदम के रूप में देखा जाना चाहिए |

कैम्प के आयोजन से सम्बन्धित समस्त आयोजनकर्ता जिन्होंने परोक्ष और अपरोक्ष रूप से आयोजन को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की चाहे वह आयोजन के विज्नरी प्राचार्य शा. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर हो , चाहे समन्वयक गण हो, चाहे प्रशिक्षक गण हो या संयोजन समिति के सदस्य हो सभी धन्यवाद के पात्र है | अंत में हम बाल मनोदशा तथा शिक्षा की संवेदनशीलता को जो इस कैम्प से परिलक्षित हो रही थी को इस कविता के माध्यम से समझने की कोशिश करें |

बच्चों को बच्चा रहने दो
बाँधो मत उनको बहने दो

कुदरत में पलने दो उनको
कुदरत सा ढलने दो उनको
पाबंदी की दीवारें अब ढहने दो

उनकी दुनिया में तो झाँको
अपनी अपनी ही ना हाँको
उनको भी कुछ कहने दो

सच्चाई की राह सुझाओ
उनकी हर शंका सुलझाओ
पर काँटे खुद ही सहने दो

कर के ही तो वे सीखेंगे
गढ़ के ही तो जग जीतेंगे
कंचन बनेंगे दहने दो

बच्चों को बच्चा रहने दो
बाँधो मत उन्हें बहने दो

समीक्षात्मक मूलयांकन प्रतिवेदन

लर्निंग कैम्प

दिनाँक 28/2/17

शास.शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर

Annexure – 3 (ii)

ट्रांसजेंडर के प्रति शिक्षकों की संवेदनशीलता हेतु कार्यशाला

शासकीय शिक्षक षिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर, रायपुर में दिनांक 10 अप्रैल 2017 को शिक्षकों में **ट्रांसजेंडर के प्रति संवेदनशीलता एवं जागरूकता का विकास** हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण हेतु ट्रांनजेंडर पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता **छत्तीसगढ़ ट्रांसजेंडर वेलफेयर बोर्ड की सदस्य श्रीमती विद्या राजपूत सोनी** एवं **एडवहोकेट सुश्री रविना बरिहा** रही।

श्रीमती विद्या राजपूत सोनी ने ट्रांसजेंडर क्या हैं ? इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वास्तव में वे भी एक साधारण मनुष्य हैं जो कि इसी समाज का एक अंग है। मनुष्य के द्वारा जन्मी यह लिंग विभेद के कारण ना तो पुरूष की श्रेणी में आती है और ना ही स्त्री की श्रेणी में आती है। हालांकि शारीरिक रूप से एक मनुष्य होते हुए भी मानसिक सोच के कारण समाज में इनकी स्थिति सोचनीय है।

पहचान – ट्रांसजेंडर की पहचान 12 से 16 की उम्र में होने लगती है। जब वे अपने को समझने लगते है तो अपने को दुविधा की स्थिति में पाते है। चूंकि उनको लड़के होने पर भी लड़कियों की तरह अहसास होने लगता है।

श्रीमती विद्या राजपूत ने ट्रांसजेंडर से जुड़ी भ्रांतात्मक स्थितियों को खुद की जिंदगी से जोड़ते हुए पूरे समाज से इस दिशा में कदम उठाने के लिए आहवान किया। उन्होने ट्रांसजेंडर द्वारा राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर किए गए कार्यो का उल्लेख किया। उन्होने छत्तीसगढ़ राज्य को पूरे देश में ट्रांसजेंडर के प्रति संवेदनशील होने के लिए संवेदनशील राज्य की संज्ञा दी और राज्य शासन द्वारा ट्रांसजेंडर को मिलने वाली सरकारी सुविधाओं की जानकारी प्रदान की।

सुश्री रविना बरिहा ने ट्रांसजेंडर की महत्ता को वैदिक काल से लेकर वर्तमान युग के संदर्भ में भली–भांति स्पष्ट किया। वक्ताद्वय ने उपस्थित बी.एड./एम.एड. के प्रषिक्षार्थियों से स्कूल में ऐसे किसी ट्रांसजेंडर विद्यार्थी के प्रति संवेदनषीलता अपनाने की बात कही। **सुश्री रविना बरिहा** ने बताया कि सुप्रीमकोर्ट के ट्रांसजेंडर संबंधी लिंग निर्धारण संबंधी अधिनियम को स्वीकारने वाला राज्य छत्तीसगढ़ सर्वप्रथम राज्य है जिसने छत्तीसगढ़ ट्रांसजेंडर बोर्ड का गठन किया।

वर्तमान में **छत्तीसगढ़ ट्रांसजेंडर बोर्ड** की **अध्यक्ष महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती रमशीला साहू है।**

छत्तीसगढ़ ट्रांसजेंडर बोर्ड –

अध्यक्ष – माननीया श्रीमती रमशीला साहू

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय छत्तीसगढ़ शासन

सदस्य – 1. श्रीमती विद्या राजपूत सोनी

2. सुश्री रविना बरिहा एडवहोकेट

माननीया अध्यक्ष श्रीमती रमशीला साहू के प्रयास से 10 दिसम्बर 2016 से लिंग परिवर्तन सर्जरी सरकारी खर्च पर होने लगे है।

उसके अतिरिक्त कौशल विकास, पार्लर, बुटिक, बुकिंग, प्लेसमेंट क्षेत्र में भी ट्रांसजेंडर को प्राथमिकता दी जा रही है।

छत्तीसगढ़ नगरीय प्रशासन द्वारा ट्रांसजेंडर के लिए 2 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा ट्रांसजेंडर को अध्ययनरत होने पर शिक्षा के क्षेत्र में जुड़े रहने हेतु अनुसूचित जाति व जनजाति के समकक्ष छात्रवृत्ति का प्रावधान रखा गया है।

अंत में कहा गया कि बात संवेदनशीलता की, समता की है, भाषा, पद, रंग, वेशभूशा, जाति, क्षेत्र, लिंग आदि के आधार पर होने वालें भेदभाव को सामूहिक प्रयास से दूर किया जाना चाहिए।

उक्त कार्यशाला में प्राचार्य डॉ. योगेश शिवहरे एवं समस्त आचार्यगण एवं बी.एड. /एम.एड. के प्रशिक्षार्थियों की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर दिवस

19 अप्रैल 2017 को शासकीय शिक्षक षिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर, रायपुर में **राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर दिवस** मनाया गया।

उल्लेखनीय है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा **15 अप्रैल 2014** को तृतीय लिंग समुदाय के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिया गया था। इस निर्णय द्वारा सर्वप्रथम समुदाय को तीसरे लिंग के रूप में दर्जा प्राप्त हुआ। सभी राज्य सरकारों व केन्द्र शासित प्रदेषों को तृतीय लिंग समुदाय के लिए कल्याण हेतु कार्य करने निर्देष जारी किए गए।

वस्तुतः कहा जाए तो ट्रासजेंडर को विधिवत मान्यता इसी दिन प्राप्त हुई अतः इस दिवस को राष्ट्रीय ट्रासजेंडर दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

हमें इस बात पर गर्व है कि छत्तीसगढ़ राज्य देश का ऐसा पहला राज्य है, जहां माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देष के बाद विभिन्न प्रकार के कल्याणकारी निर्देष दिए गए। यह हमारे राज्य के जनप्रतिनिधियों एवं शासन की संवेदनषीलता का परिणाम है।

एक आदर्ष समाज का निर्माण तभी हो पाएगा जब समाज के सभी वर्गो को विकास के समान अवसर प्राप्त हो।

आज के भागदौड़ के जीवन में हम इतना व्यक्त हो जाते है कि समाज के उन हिस्सों के बारे में नहीं सोच पाते है। जो हमारे समाज का ही एक अंग है।

श्रीमती विद्या राजपूत सोनी ने कहा कि हमारा समुदाय भी इस समाज का एक हिस्सा है। इसे बताने की लगातार आवष्यकता महसूस होती रही है।

स्माज को बेहतर लाने सभी का स्नेह व मार्गदर्षन अति आवष्यक है अतः महाविद्यालय द्वारा इसी सोच को लेकर उक्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया –

इस कार्यक्रम के

मुख्य अतिथि – श्रीमती रमषीला साहू

माननीय मंत्री जी, समाज कल्याण विभाग

छत्तीसगढ़ शासन

विशिष्ट अतिथि – श्रीमती विभा राव

राष्ट्रीय सविच,

भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा,

श्री अनिल पुसदकर

अध्यक्ष, प्रेस क्लब, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्षता – श्रीचंद सुंदरानी,

माननीय विधायक, उत्तर रायपुर (छ.ग.)

संरक्षक – डॉ. योगेष षिवहरे, प्राचार्य शा.षि.षिक्षा महाविद्यालय, रायपुर

उक्त कार्यक्रम में परिचर्चा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम ट्रांसजेंडर द्वारा प्रस्तुत किया गया। उपस्थित सभी प्रषिक्षणार्थियों को इससे ट्रांसजेंडर के प्रति संवेदनाषीलता हेतु प्रेरणा मिली।

Annexure – 4 (i)

Best Practices

(1) Title of the Practice – Life skills training,

(2) The context that required initiation of the practice –

Govt. College of Teacher Education, (C.T.E.) Raipur is playing an important role in reforming of the education system of Chhattisgarh as it is the nodal agency for 17 districts. This college is not only providing training to pre-service and in- service teachers but also making efforts to improve the quality of education through researches in the field of education, solutions of educational problems, skill development among the teachers, personality development, professional development by organizing various workshops, seminars and training programmers. College has been working for some burning issues, and one of them is problems of adolescence. The target group of our college is the adolescents of our state, so it is needed to bring them familiar with the reality of life, to let them understand hardships of life, difficulties of life and ways to overcome these hardships and difficulties. For the same reason a field test workshop on life skills was organized in the college from 23rd January 2017 to 27th January 2017. The following are the details of the workshop -

Name for field test a workshop on life skills
duration 23.01.2017 to 27.01.2017

- **Participants –**
  - (i) From J.R. Naidu, Govt. Hr. Sec. School, Ravi gram Raipur
    – 08 students from class 9th
    – 08 students from class 11th
  - (ii) P.G. Umathe, Govt. Girls Hr. Sec. School, Shanti Nager, Raipur
    – 08 students of class 9th
    – 08 students of class 11th
    Total no. of students = 32

(3) Objectives of the practice – The practice had been under taken for the following objectives –

- (a) To introduce life skills
- (b) For development of life skills & construction of healthy social environment.

(c) To develop the habit of doing the work by self among the students.
(d) To develop the spirit of team work through, collaborative work.
(e) Development of life skills for enrichment of life.
(f) To develop balanced emotional feeling to words society and environment.
(g) To motivate the students to balance knowledge, views and skills.
(h) To prepare a good citizen.

Collaborative work

For the below reasons training programme was organized in C.T.E. Raipur

- It is the motto of C.T.E. to provide quality education to the adolescents and to lead them for better life.
- To develop the awareness about self concept among the adolescents.
- To prepare the adolescents to face the challenges of day to day life.
- To develop the capacity of taking self decision among adolescents.
- To develop the health related awareness to prevent the bad effects of drug addiction and HIV.

(4) The Practice – 32 students of class 9^{th} and 11^{th} were participated in the workshop, which was a field test workshop for life skills training. A group of trainers among whom student teachers of B.Ed. and trainees of M.Ed. along with teachers of same schools were included gave training to the 32 students the following points were discussed in the training -

(a) Who am I?
(b) I love myself.
(c) My emotions.
(d) Strong and weak points
(e) Confusion and view points
(f) We can change
(g) New recognition
(h) Friends and pressure groups
(i) Power to say "No"
(j) Health and Hygiene
(k) Changes and problems of adolescence
(l) Listening, communication

(m) Problem solving, decision making

(n) Gender

(o) Addiction bad effects, Analysis

(p) My goals

The following aspects were included in the training – life skills, self awareness, effective communication, Inter personal relationship, gender discrimination, decision making capacity, problem solving capacity, health and hygiene etc. The very first step was a pretest in which all the above written aspects were included and a test was taken and the results were listed.

After carefully observing the results of pretest the training started through various activities such as storytelling, role play, group discussion, analysis of any story or happening, mime, communication, games of mirror, brain storming, group work, case studies, questionnaires, questions and answers, games, analysis of conditions, question box drawing pictures etc. Stories, autobiographies related to social evils, social behaviors, addictions, love and attraction, interest in field other than studies, unhealthy traditions of society, relationship between family members, health and hygiene, recognition of self etc. were included in the training.

After a training of 05 days post test was taken and the results of post test were found so positive which reflect the success of this training, feedback was also taken. A follow up programme was also organized for this training.

(5) Obstacles faced if any and strategies adopted to overcome them-

- As each and every student needs the true knowledge of life's every aspect and for this large number of trainees are required. To prepare trainees, it needs a lot of time, expenditure and expertise resources for preparation of large no. of trainers lack in present situation.
- Because of the inclusion of adolescence problems which are generally not discussed in society, family and surroundings, so in the initial stage of training students tend to hesitate but after wards they participated actively.

  It has been realized that it is not possible to expand this programme in every school and every block, so, resources are needed to acquire from any level.
- To overcome these difficulties college is trying to first introduce this training programme in 20 lab schools and after that this will be organized block wise and district wise, for the coming months Abhanpur block has been chosen for this programme.

Impact of the training –

- Personal needs and queries of the students were answered and many adolescence related questions / myths / problems were answered. So they were satisfied and many of their myths were answered.
- Students were motivated to develop their own self.
- After the training the students discussed the issues at their home, they discussed with their parents about alcoholic addiction and its hazardous effects on health. In the follow up programme of this training some of the students told that they were able to prevent their parent from taking alcohol on the occasion of Holi.

Resources Required

1. Life skill module published by unicef and unesco.
2. Population education module published by NCERT.
3. Module published by women and child development department.
4. Chart paper, flip chart, sketch pens, pencils, card boards,

Contact Person for further details –

Smt. Madhu Dani

Annexure – 4 (ii)

Best Practices

(1) Title – Art Education as a Pedagogical Intervention

(2) The context that required initiation of the practices –

The need to integrate art education in the formal schooling of our students now requires urgent attention if we want to retain our unique cultural identity in all its diversity and richness. Today we stand at a point in time when we face the danger of losing our unique cultural identity. Arts in India are also living examples of its secular fabric and cultural diversity. An understanding of the arts of the country will give our youth the ability to appreciate the richness and variety of artistic traditions as well as make them liberal, creative thinkers and good citizens of the nation. Arts will enrich the lives of our young citizens through their lifetime, not merely during their school years.

Teacher education and orientation must include a significant component that will enable teachers to efficiently and creatively include arts education school authorities must acknowledge in practice that arts are to be given significance in the curriculum and not just restricted to being so called entertaining or prestige earning activities. They must permit and actively encourage students to study the arts. Public campaign and advocacy to promote art educations relevance. The mindset of guardians, school authorities and even policy makers needs to be jolted to accept that the arts will enrich the development of young minds. Emphasis should be given on learning than teaching in arts education and teachers should have participatory and interactive approach.

Following the above context a practice or exercise is necessary to introduce arts as a pedagogical intervention to fulfill the objectives of NCF-2009.

(3) Objectives of the practice – The objectives of this workshop are as follows –

(a) To get acquainted with the basic skills of theatre.

(b) To develop understanding of how to connect theatre to the classroom process.

(c) To make classroom teaching effective through art education.

(d) To develop the understanding of inclusive classroom for slow learners and child with special needs through art education.

(e) To develop natural intelligence.

(f) To develop the capacity of self expression.

(g) To develop sensitivity in teaching through art and making external and internal environment motivated.

(h) To develop democratic approach in classroom.

(4) The Practice

This practice was exercised in the college among B.Ed. and M.Ed. trainees. All the 400 B.Ed. and M.Ed. trainees were divided into 04 groups and the practice was done through some resource persons, namely -

(1) Mr. Shivdasji Ghodke- Professor, Academy of theatre arts, University of Mumbai. (Maharashtra) – A specialist of theatre and other arts.

(2) Mrs. Rachana Mishra- Chhattisgarh film and visual art society.

(3) Mr. Suhas Bansod – IPTA, Raipur

(4) Mr. Kranti Dixit- Chhattisgarh visual art society, IPTA, Raipur.

(5) Mr. Nishu Pandey – IPTA, Raipur

(6) Mr. Shivashish Chatterji – Director of desire dance academy, Raipur

(7) Mr. Aakash Soni – National level classical dancer

(8) Miss Archana Dhruw – Bharatiya Jan Natya Sangh IPTA, Bhilai

(9) Mr. Jagannath Sahu – Joint secretary, India theatre association, Bhilai, IPTA

All the above resource persons worked in 04 groups of B.Ed. and M.Ed. trainees about the effectiveness of art and art education. They worked out on the following practices –

- Partial acting
- Mirror acting
- Quick practice of some sentences
- Face reading
- To lower the monotony of the classroom teaching through body postures.
- To improve the confidence level of students
- To teach the content through different /new approaches.

The above mentioned were the basic practices which were undertaken in the College from 10.01.2017 to 25.01.2017. This workshop was organized according to the objectives of new curriculum based on NCF-2009, which states that methods of art should be an integral part of curriculum and it is very effective in classroom teaching hence it is very important for the B.Ed. and M.Ed. trainees.

(5) Obstacles faced if any and strategies adopted to overcome them.

B.Ed. and M.Ed. trainees are matured enough and keen to learn new approaches of teacher education; hence all of them were highly interested in he workshop and tried to learn the integration of art (music, dance, theatre) in classroom teaching. They learned the ways by which different forms of art can be used for effective learning and classroom management. The resource persons also made serious efforts for making them understand this new pedagogical intervention, hence no obstacles were faced.

For trainees numbering 400 it is a challenge to conduct such programme hence not easy to cater the need of each and every trainee, most of the trainees took it as a preparation of cultural programme for annual function Such type of interventions are seen as co-curricular part, so most of the teachers do not take it seriously but after due course of time it may be possible for them to take it as a pedagogical intervention.

(6) Impact of the practice – Art is a good approach of teaching in classroom. The methodology of teaching through art is participatory, leading students to form their own questions, explore their own imaginative world, find their own areas of interest and develop accordingly with the guidance of teachers. Here the teacher's role is many fold as the learning process involves a lot of experimentation. The teacher is a guide, enabler, motivator, manipulator, facilitator and teacher as part of whole group. The teaching mode is workshop mode which is based on the principles of self learning. Here the students are given chance to develop their own understanding through the available resources of books and journals by which their hidden potential through self observation and self discipline could be brought out. Through their self reflective diary, their growth can be assessed.

So the above practice produced deep impact in the B.Ed. and M.Ed. trainees and they are ready to use this new technique in their classroom.

(7) Resources Required –

Resource persons related to the field of arts

(8) Contact person for further details –

Dr. Seema Agrawal, Asst. Professor, C.T.E., Raipur